कान्यकुब्ज

वर्ष ८०

कान्यकुब्ज-कुल कमल-दिवाकर
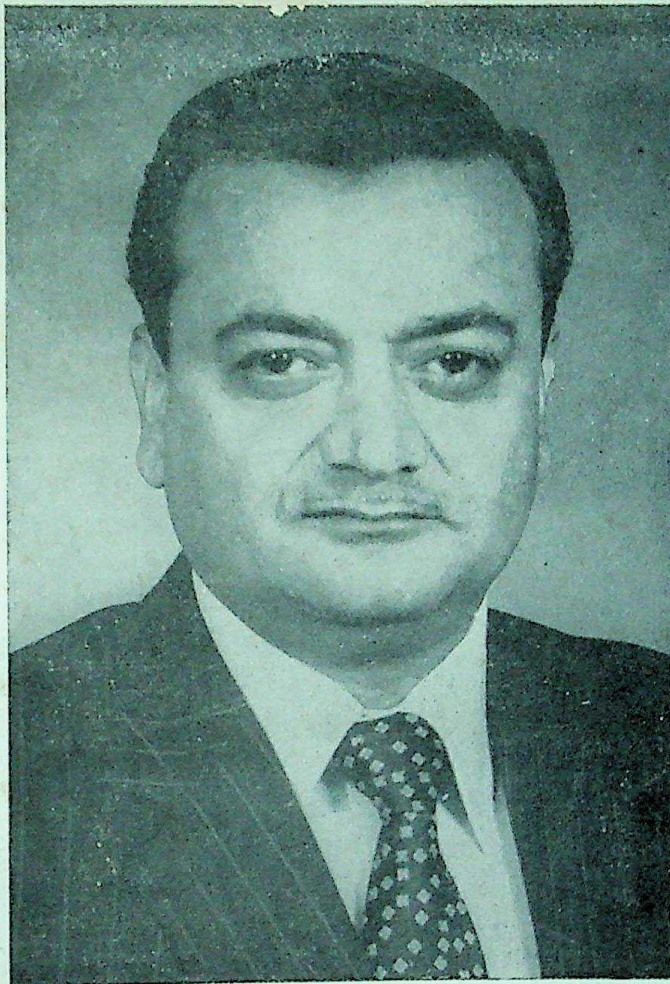
श्रीमान् पं० प्रदीप कुमार जी द्विवेदी, बी० टेक० (ऑनर्स)

[परिचय पृष्ठ २६२ पर]

वार्षिक
२०)

सम्पादक
देवीशंकर मिश्र 'अमर', एम. ए., एम. एस-सी.,
एम. ज़ेड. एस. आई., एफ़. आई. ए. ज़ेड.,
साहित्य-रत्न, धर्म-रत्न

इस अंक का
५)

कान्यकुब्ज-कुल-कुमुद-कलानिधि

१–श्रीमान् पं. रवि शङ्कर मिश्र .... प्रोप्राइटर "पारिजात", शान्ता क्रूज़, बम्बई
२–श्रीमान् पं. गोपीनाथ बाजपेयी .... डाइरेक्टर, सी. सी. ऐण्ड सी. कं. प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
३–श्रीमान् पं. दया शङ्कर बाजपेयी .... सीनियर ऐडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, लखनऊ
४–श्रीमान् पं. कृष्ण कन्हैया अवस्थी .... तारक प्रमाणिक रोड, कलकत्ता
५–श्रीमान् पं. श्रीनारायण मिश्र .... पूर्व चेयरमैन, महाराष्ट्र इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड, सिकन्दराबाद
६–श्रीमान् डॉ. एन. एम. तिवारी .... रिटायर्ड प्रोफ़ेसर मेडिकल कॉलेज, बैतूल
७–श्रीमान् पं. रवीन्द्र नाथ शुक्ल .... रिटायर्ड कलेक्टर ऑफ़ कस्टम्स ऐण्ड सेण्ट्रल एक्साइज, बंगलौर

कान्यकुब्ज-कुल-कुमुद-चन्द्रिका

श्रीमती चन्द्रकान्ता अवस्थी, धर्मपत्नी पं. कृष्ण कन्हैया अवस्थी, तारक प्रमाणिक रोड, कलकत्ता

कान्यकुब्ज-कुल-मौलि-मुकुट-मणि

१–श्रीमान् पं. बटुकनाथ पाण्डेय .... एम ए., एम. एड., रिटायर्ड प्रिंसिपल, दिल्ली
२–श्रीमान् कैप्टेन पं. उमाकान्त शुक्ल .... एम. बी. ई., पार्क रोड, लखनऊ
३–श्रीमान् पं. श्रीधर मिश्र .... सीनियर ऐडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, लखनऊ
४–श्रीमान् प्रो. डॉ. रमेश चन्द्र मिश्र .... चेयरमैन, वाडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ़ हिमालयन जिऑलोजी, लखनऊ
५–श्रीमान् पं. आदित्य नारायण त्रिवेदी .... ऐडवोकेट, हाई कोर्ट, लखनऊ

कान्यकुब्ज-रवि-रश्मि-मालिका

श्रीमती सहोदरा बाई तिवारी, पूज्या माता डॉ एन. एम. तिवारी, डिस्टिलरी रोड, बैतूल

कान्यकुब्ज-कुल-कमल-दिवाकर

१–श्रीमान् पं. नर्मदा प्रसाद पाण्डेय .... एम. ए., बी. कॉम, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली
२–श्रीमान् पं. रामकृष्ण त्रिवेदी .... मुख्य चुनाव आयुक्त, निर्वाचन सदन, नई दिल्ली
३–श्रीमान् डॉ. जी. एन. दीक्षित .... राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ
४–श्रीमान् प्रो. डॉ. नरेश चन्द्र मिश्र .... किङ्ग जॉर्जेज़ मेडिकल कॉलेज, लखनऊ
५–पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी, ... मुख्य न्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ
६–श्रीमान् पं. विश्वम्भर देव मिश्र .... ऐडवोकेट हाई कोर्ट, रायपुर
७–श्रीमान् पं. जितेन्द्र मिश्र .... ऐडवोकेट हाई कोर्ट, लखनऊ

'कान्यकुब्ज-प्रतिपालिका'

१–श्रीमती सुभद्रा देवी पाण्डेय, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली
२–श्रीमती शारदादेवी शुक्ल, कमलानेहरू रोड, बलसाड
३–श्रीमती शांतिदेवी त्रिपाठी, प्रोप्रा. त्रिपाठी कं. बम्बई

'कान्यकुब्ज-प्रतिपालक'

१–पं. रमाशंकर शुक्ल, आई. ए. एस. रिटा., ग्वालियर
२–पं. रामचन्द्र शुक्ल, ऐडवोकेट, हाई कोर्ट, ग्वालियर
३–डॉ. रजत दीक्षित, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ
४–पं. चन्द्रदत्त मिश्र, ऐसि. एक्साइज कमिश्नर, ,,
५–पं. श्रीनाथ बाजपेयी, चौपटियाँ रोड, ,,
६–पं. ओ.एन. दुबे, प्रो. संदल उड आ. फै., मकरंदनगर
७–डॉ. लक्ष्मीकान्त मिश्र, रोशनपुरा, भोपाल
८–श्री आर. बी. शुक्ल, जेनरल मैने., शुगर कार्पोरेशन
९–श्री लोमेश कुमार जी अवस्थी, अहमदाबाद
१०–पं. चन्द्रभाल शुक्ल, ऐडवोकेट लखीमपुर-खीरी
११–पं. ब्रजकिशोर शुक्ल, रिटा. रे. ऑफ़िसर, इलाहाबाद
१२–श्री वी. पी. पांडेय, सूबेदार ताकू. परि., होशंगाबाद

कान्यकुब्ज-कुल-कमल-दिवाकर
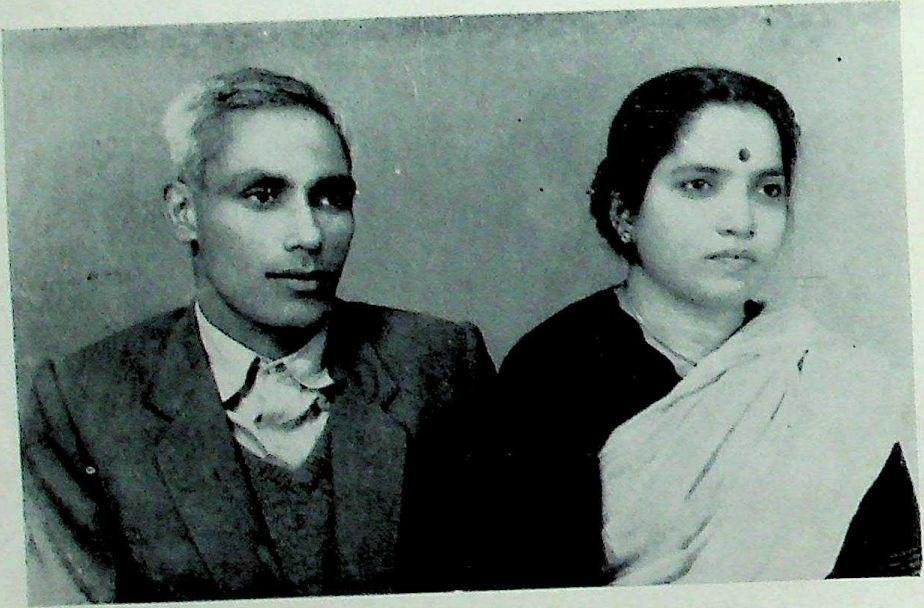
श्रीमान् पं० देवीरत्न वाजपेयी, बी० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट
तथा धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी वाजपेयी
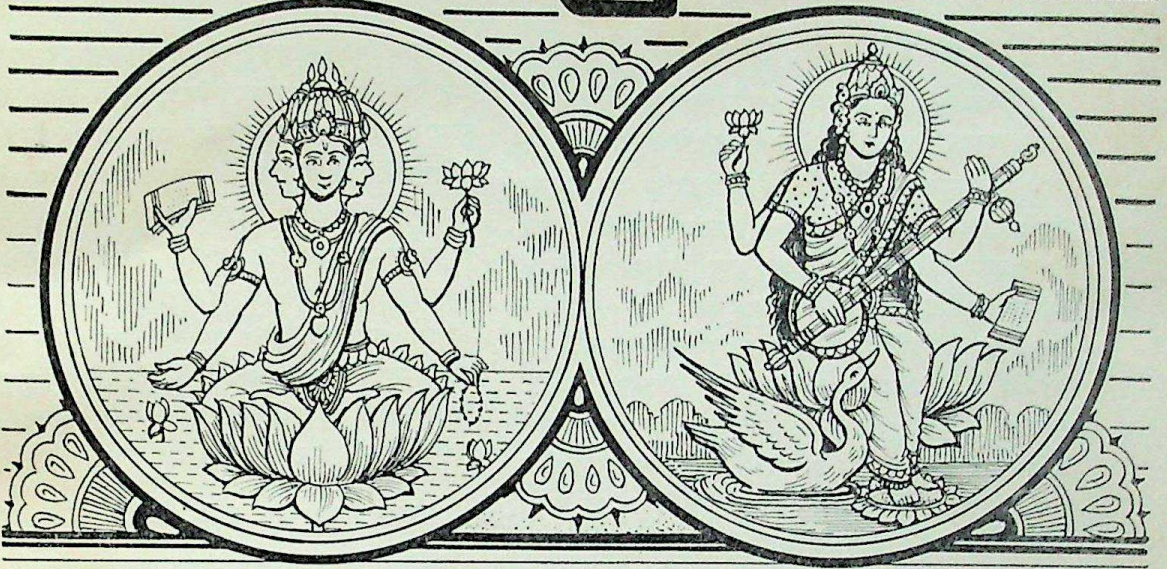
अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

जनवरी-अप्रैल १९८८

सम्पादक : देवी शंकर मिश्र, 'अमर', एम० एस-सी०, एम० ए०, साहित्य-श्री, एम० ज़ेड० एस० आई०, एफ़० आई० ए० ज़ेड०, साहित्य-रत्न, धर्म-रत्न

सह-सम्पादिका : कुमारी मुकुल मिश्र, बी० ए०

वर्ष ८२
संख्या १-४

मोहन

[रचयिता—स्व० श्री 'उमेश' जी वाजपेयी, एम० ए०]

[१]

मरकत मेघ मोरचन्द के सरिस स्याम ,
तन पै लसति चारु चित्रित झँगुलिया ।
झूमत झँडूले केस, कुंडल कपोलन पै ,
माथे पै मुकुट मंजु, मसि की बिँदुलिया ।
अंजन दृगन, मनि भ्राजि रही नासिका मैं,
राजि रहीं नान्ही-नान्ही मुख मैं दँतुलिया ।
भौंर चकडोर है विराजि रही एक कर,
छाजि रही दूजे कर मंजुल मुरलिया ॥

[२]

माथे पै मुकुट की छबीली छटा छाजति है ,
राजति है ता पै मोरपंख की पँखुरिया ।
कोरवारी आँखिन पै घूमिकै मरोरवारी,
लटकी कपोलन पै लट की लटुरिया ।
फहरत पीट पट, लहरत बनमाल,
छहरत मंजु गरे गुंजन की गुरिया ।
देखु री गुबर्धन तैं गौरी-राग गावत,
गुविन्द आजु आवत बजावत बँसुरिया ॥

—०—

निशा का अवसान

अलसित प्रकृति ने अँगड़ाई ले आँखें खोलीं, देखा—

उत्तर दिशा में ध्रुव-धारणा-धृत भक्तश्रेष्ठ ध्रुव उसी प्रकार तपस्या में लीन बैठे हुए थे। उनकी परिक्रमा करते हुये सप्तर्षियों ने तृतीय प्रहर के उत्तरार्ध का निर्देश किया। प्रकृति सजग हो उठी। झकझोर कर उसने तमस्विनी की सुखद निद्रा भङ्ग कर दी। तन्द्रिल यामिनी ने करवट ले पूर्व की ओर दृष्टि डाली। सप्ताश्व-स्यन्दन-गामी प्रभाकर के पथ-प्रदर्शक-स्वरूप असुर-गुरु आचार्य शुक्र असिताभ नक्षत्रमार्ग का लगभग चतुर्थांश पूर्ण कर चुके थे। क्लान्त निशीथनी ने लज्जावश अपने मणिजटित उत्तरीय को शीघ्रता के साथ मुख पर खींच लिया। झोंका खा कर असावधान प्रकृति के हाथों से नीलम का पात्र छूट गया और प्राची के असित अञ्चल में नीलिमा बिखर गयी। विभावरि के सहायतार्थ सदागति ने अपना मलयागत मारुत-व्यजन सम्हाला और एक-एक कर अनेक नभ-दीप बुझा दिये। क्षणदा ने अवसर पा एक सन्तोष की सांस ली और अन्तरिक्ष में अस्तव्यस्त फैले पड़े हुये अपने श्यामल चीर को सम्हालने लगी।

भावी वियोग का स्पष्ट आभास पा निशानाथ का उत्फुल्ल मुखकमल हतप्रभ हो उठा। विपुला के अङ्क में हरीतिमा की सुकोमल शय्या पर क्रीड़ा करती हुयी किरण-बालायें सशङ्कित हो उठीं और कलानिधि की कमनीयता में सहसा ही न्यूनता आ जाने का कारण जानने के लिये रजत-रश्मियों की डोर पकड़ चन्द्रलोक की पथिक बनीं।

प्राची का नील-श्यामल अञ्चल उघार सद्यःमनहर प्रभात मुस्करा दिया। सोद्यत सृष्टि को आदेश-सा मिला और··· ···और कुछ ही क्षणों में गगनाङ्गण में दूर-दूर तक सहस्रों रजताभ धवल पाँवड़े डाल दिये गये। कमनीयता के काञ्चन कलश से कनक-कणों की राशि-की-राशि बिखेरतीहुयी अरुण परिधानावृता उषा ने उन पर अपने सुकोमल चरणों के चिह्न अङ्कित करते हुये स्वर-प्राङ्गण में प्रवेश किया। प्रभात ने आनन्दातिरेक में प्रकृति का हिरण्य-भाण्ड उलट दिया और दसों दिशाओं में द्रवित जातरूप बह निकला।

अम्बरमणि ने उदयाचल पर आकर उषा का अभिसार देखा, प्रभात का प्यार देखा, प्रकृति का दुलार देखा, सृष्टि के उपादानों का उपहार देखा और देखा दिशाओं-विदिशाओं का बलिहार। उनका स्वाभाविक ही स्मित आनन और भी खिल उठा। उषा ने उतारनी आरम्भ की बालरवि की मनोज्ञ आरती, प्रभात ने उसके गले में मेल दी स्वर्णिम सुमनों की सुरभित माला, प्रकृति ने निखिल चराचरों को सजग कर दिया और सृष्टि के समस्त पार्षदों ने अंशुमाली के अभिषेक के हेतु हलचल-सी मचा दी जिसकी क्रियाशीलता से समस्त दिशायें आन्दोलित-सी हो उठीं।

शर्वरी ने एक दृष्टि पृथ्वी की ओर डाली, देखा—

रवि-रश्मियाँ उसके तथा उसके पति शुभांशु के नीहार-कणों के मिस गिरे हुये श्रम-सीकरों को कन्दुक बना तृण विस्तरित लीलाभूमि में उल्लसित हो खेल रही थीं और उजाड़े दे रही थीं उन सुरम्य कौतुक-मण्डपों को जिनका वितान तान विरोचन की कान्ति-बालाओं ने शशिनी के ज्योत्स्नालोक में समस्त रात्रि उत्सव मनाया था। सरोवरों की हिलोरों के हिंदोले पर झूलते हुये जलजात उनकी क्रीड़ा से आह्लादित हो अपने सहस्रों दल-करों से अपने परिमल का कोष लुटा रहे थे जिसे अपनी झोली में भर-भर कर मलय मारुत तरु-पल्लवों पर पुलकित हो थिरक रहा था। पराग-कणों के लोभ में उड़ी जा रही थीं मधुकरों की अवलियाँ-की-अवलियाँ पंखुरियों के अवगुण्ठन में संकुचित-सी अर्धोन्मुक्त कलिका-प्रेयसियों की खोज में उनके सौन्दर्य, उनके स्वरूप और गुण-गणों का गुन-गुन स्वर में गुणातीत गुणगान-सा करती हुयी।

वेदना के भार से निशा का हृदय कराह उठा। एक शीतल निःश्वास छोड़ उसने प्रतीची का पट बन्द कर लिया और·········

और विहग वृन्द उसके असहाय क्रोध का अवलोकन कर चहचहाते हुए परिहास-सा कर उठे।

सम्पादकीय

दहेज सम्बन्धी हत्याओं का प्राथमिक अपराधी कन्यापक्ष

आज दहेज की समस्या एक ऐसी विकराल समस्या के रूप मे हमारे सामने आ खड़ी हुई है कि बहुत से माता-पिता तो भय के कारण अपनी बेटियों की शादी करने से ही कतराने लगे हैं। वे चाहते हैं कि शादी के बजाय बेटी नौकरी करे और सुख से रहे। मैंने इस विषय में कई लड़कियों से बातचीत की और मेरी आँखें उस समय खुली की खुली ही रह गयीं जब उनमें से अधिकांश क्या वरन् सभी का मत यही पाया कि दहेज के कारण हुई हत्याओं में वास्तविक अपराधी तो कन्या पक्ष ही है। एक लड़की ने कहा—

कन्यापक्ष का चुग्गा

'दहेज' की परिकल्पना जिस उद्देश्य को लेकर की गयी थी वह खो चुका है। अब यदि दहेज का नया अलंकरण, आपसी सौदेबाज़ी मे दिया जाने वाला धन कहा जाये तो अधिक उपयुक्त होगा। हास्यास्पद बात यह है कि यह सौदेबाज़ी दो मनुष्यों के जीवन की होती है जिन्हें 'पति-पत्नी' के रूप में जीना होता है, जुड़े हुए अनेक रिश्तों को निभाना होता है और अन्ततः अपनी संतति को पुनः इसी क्रम में प्रेरित करना होता है। इसी धुरी पर समाज, जीवन चलता रहता है, चलता रहेगा। फिर अचानक कहीं एक सिसकी उभरती है, आँसुओं का निरन्तर प्रवाह होता है, चीख, और फिर एक हत्या या आत्महत्या (तथाकथित दुर्घटना)। यही घटनाएं जब आम हो जाती हैं मन मस्तिष्क शून्य होने लगता है। हर अगले घर में कोई बहू स्टोव से जलती है, कहीं कुएं में लाश मिलती है तो कोई पंखे से लटक जाती है। परन्तु अब ये घटनायें कोई खास वितृष्णा पैदा नहीं कर पातीं क्योंकि बिना कारण या परिस्थितियों का अनुमान किये हम इन्हें 'दहेज हत्या' की संज्ञा दे डालते हैं और लड़की के पति, श्वसुर और अन्य ससुराली रिश्तेदारों को दोषी मान बैठते हैं। उन्हें सज़ा दिलाने, सबक सिखाने के लिए धरना देते हैं, मन्त्रियों का घिराव करते हैं और पत्र-पत्रिकाओं में लम्बे-लम्बे लेख प्रकाशित करवाते हैं, परन्तु यह नहीं सोचते कि इन हत्याओं के लिए वास्तविक ज़िम्मेदार कौन है? किसकी महत्वाकांक्षा इस पाप की अप्रत्यक्ष भागीदार है?

कन्या सुशील, पढ़ी लिखी, भावुक है, वास्तविकता को पहचानती है पर कल्पना पर आदर्श हावी है, धीरे-धीरे कल्पना का आदर्श वास्तविकता को ढक लेता है और कन्या दृढ़प्रतिज्ञ हो जाती है—संघर्ष करके अपने आदर्श को जीवित रक्खेगी। पिताजी सम्पन्न हैं—या सम्पन्न होना ही जीवन का लक्ष्य समझते हैं—पूंजी के प्रति अगाध श्रद्धा है। पुत्री का विवाह धन के बल पर (भले ही वह धन ऋण लिया गया हो) एक ग़रीब परिवार के किन्तु आधुनिक मेधावी (मेधावी होना अब धनार्जन से जुड़ गया है) इंजीनियर वर से कर देते हैं जिसकी आँखों में 'रिश्वती धन' की चमक है। पत्नी इस दुष्कर्म का विरोध करती है तो पहले एक दो बार मोहवश सुनते भी हैं फिर फ़रमान जारी हो जाता है— मुझे भाषण देने की आवश्यकता नहीं है, अपनी औक़ात में रहो, घर गृहस्थी सँभालो, गहने गढ़वाओ और चुप पड़ी रहो। आदर्श का भवन चरमरा जाता है। पत्नी अपना मानसिक द्वन्द्व सह नहीं पाती, ऊबकर जीवन का अन्त कर लेती है। कन्या के पिता हारे जुआरी की तरह सबूत जुटाते हैं, जामाता के चरित्र पर संदेह करते हैं, नियत खोटी बताते हैं, और समाज व क़ानून इस मृत्यु को दहेज हत्या कहकर दोषी को सज़ा देता है। पर कहां मिली असली अपराधी को सज़ा? असली अपराधी तो अब भी पुनः दूसरी पुत्री का जीवन बरबाद करने जा रहा है

विवाह के लिये दहेज के नाम पर होने वाली सौदेबाज़ी में दोनों ही पक्ष बराबर के ज़िम्मेदार हैं। यदि गहराई से विचार किया जाय तो कन्या स्वयं और कन्या के परिवार के लोग ज्यादा उत्तरदायी हैं। मन के कोने में छिपी अदम्य इच्छाओं को पूरा करने के लिये, तथाकथित भौतिकवादी सुखों को जुटाने के लिये वर या वर पक्ष के सम्मुख चुग्गा डालते हैं और उनके मुँह फेरने पर मात्रा बढ़ा देते हैं—इस भावना से कि कभी तो मुँह मोड़ेगा फंसने के लिये। जब वह उस चुग्गे का आदी हो जाता है, उसकी माँग सीमा से बाहर होने लगती है, तो कन्या के ससुराल वाले, जो अब रिश्तेदार हो गये हैं 'लालची हैं, दहेज लोभी हैं, निकम्मे हैं' की संज्ञा पाने लगते हैं। आख़िर क्या औचित्य है इस चुग्गे का? यह एक प्रकार से प्रलोभन नहीं है तो क्या है? अपराधी की भूमिका बनने में क्या कसर रह गयी? वास्तव में असली अपराधी तो कन्या ही है जो ऐसे बेईमानी के रिश्तों को स्वीकार करती है। क्यों नहीं अस्वीकार कर देती उन बन्धनों को जिनका ताना-बाना अपराधी प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिये रचा गया है? यदि कन्या वास्तव में सशक्त है (अबला होने से कतराती है या इस संज्ञा का विरोध करती है) तो उसे अपने परिवारवालों को जता देना होगा कि 'मैं ऐसे रिश्तों को स्वेच्छा से ठुकराती हूँ जिनको जुटाने के लिये मेरे माता-पिता को एक सामाजिक अपराध की नींव डालने का कथित सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। पहल इन दहेज हत्याओं को रोकने में कन्या के माता-पिता और स्वयं कन्या को करनी होगी अन्यथा इसी प्रकार दूसरी पृष्ठ-भूमि पर होने वाली मौतों को दहेज हत्या का नाम देकर लोग आन्दोलन करते रहेंगे और इन मौतों की संख्या बढ़ती रहेगी।

भारमुक्त होने की मानसिकता

एक अन्य कन्या का विचार है कि दहेज हत्याओं में कन्या पक्ष दो तरह से जिम्मेदारी निभाता है—एक तो शादी के पहले, दूसरे शादी के बाद। पहले वह दहेज देकर अपनी लड़की का विवाह करते हैं, लेकिन इसे उनकी मजबूरी भी कहा जा सकता है क्योंकि हमारे यहाँ लड़कियाँ हर तरह से आर्थिक व सामाजिक तौर पर माँ-बाप पर ही निर्भर होती हैं और माँ-बाप चाहते हैं कि अपनी बेटी का विवाह करके भारमुक्त हो जायें। शादी के बाद भी वे सामाजिक व पारम्परिक रूढ़ियों में इतना जकड़े होते हैं कि जब उन्हें पता चलता है कि उनकी लड़की को दहेज के लिये प्रताड़ित किया जा रहा है तो भी वे लड़की को पति का घर न छोड़ने की सलाह देते हैं और बहुधा उनकी इस संकीर्ण मानसिकता का शिकार लड़की को बनना पड़ता है। यदि कोई लड़की दहेज के विरुद्ध है तो उसे माँगने वाले वर से विवाह ही नहीं करना चाहिये। परन्तु शादी के बाद पारिवारिक जनों से अपने व्यवहार से सम्बन्ध ख़राब नहीं करने चाहिये। उसे अपने निर्णय स्वयं लेने का हक़ होना चाहिये क्योंकि उसका अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व है और वह किसी की दासी नहीं है।

वर्तमान युग प्रगति का युग है। कई बातों में पश्चिम का अनुकरण करने पर भी भारत अभी भी पुरातन विचार-धारा में जकड़ा हुआ है—ख़ासकर विवाह के क्षेत्र में। आज की नारी हर क्षेत्र में अपने निर्णय स्वयं ले सकती है परन्तु विवाह जैसे महत्वपूर्ण मामले में अपने विचार नहीं प्रकट कर सकती। आख़िर यह विसंगति क्यों? आज की नारी की स्वतन्त्र मानसिकता है, स्वतन्त्र व्यक्तित्व है अतः विवाह के मामले में भी उसकी पसन्द-नापसन्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

लड़की की पसन्द या नापसन्द का सवाल

पसंद-नापसंद के प्रश्न को लेकर देखा जाय तो पाया यह जायगा कि दहेज हत्याओं में कन्यापक्ष की ज़िम्मेदारी एक अहम भूमिका निभाती है। पुरानी लीक, पुरानी परम्परा, जो वर्तमान समय के परिप्रेक्ष में सड़ी-गली साबित

हो चुकी है, कन्यापक्ष तोड़ सकने का साहस नहीं रखता । दहेज न देने पर वधू को जलाया जा सकता है या अनेक यातनाएं दी जा सकती हैं । इसके अर्थ तो यह हुए कि उनकी शिक्षा में सर्वप्रथम कायरता का पाठ पढ़ाया जाता है । क्यों नहीं कन्यापक्ष स्वयं अपने आपको मज़बूत बनाता, क्यों नहीं कन्या दृढ़प्रतिज्ञ हो जाती कि वह दहेज माँगने वाले भिखारियों के लड़के के साथ कदापि विवाह नहीं करेगी । यदि वह यह साहस करे तो वर पक्ष वाले अपना लड़का लिये इधर-उधर टहलते नज़र आयेंगे । इतना बड़ा परिवर्तन लाने के लिये लड़कियों को स्वयं ही आगे आना होगा । क्या कारण है कि शादी के पूर्व लड़की की पसन्द या नापसन्द पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता जबकि लड़के की रुचि का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता है ? आज तो लड़की से पहले पूछा जाना चाहिये क्योंकि लड़के का मुँह तो दहेज से ही भर दिया जाता है, वह बेचारा अपनी रज़ामन्दी क्या दे पाये । कि लड़की पसन्द है या नहीं । शादी के समय इतना दहेज देखकर या यों कहें कि अपने बिक जाने पर वह इस शर्मनाक रीति का कोई विरोध कर ही नहीं पाता । उसकी पसन्द या नापसन्द का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता ।

जब दहेज से लदी-फंदी खूबसूरत पढ़ी लिखी बहू ससुराल में आती है तब लड़के के माता पिता को अक्सर यह कहते सुना जा सकता है कि लड़की पता नहीं क्या पढ़ी है, सेवा भाव, बातचीत करने की तमीज़ है ही नहीं ।

पहले की शिक्षा में उसे प्रथम ही यह बता दिया जाता था कि पति परमेश्वर है । इस भाव को लेकर ही वह ससुराल जाती थी और इस शिक्षा का पूरा-पूरा उपयोग भी करती थी, परन्तु अब समय के साथ-साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदल चुका है । उसे अपने ऊपर किसी भी अत्याचार को न सहने की शिक्षा मिलती है, फिर अगर वधू किसी गलत बात को स्वीकार करने से मना कर देती है तो वह अच्छी बहू क्यों नहीं मानी जाती ? ऐसी इच्छा रखने वाले को 'कि दहेज भी अच्छा हो और कन्या भी सुगढ़ हो' गाँव की सीधी-साधी, भोली-भाली, कम पढ़ी-लिखी लड़की से ही विवाह करना चाहिये ।

लड़की से अधिक पैसे का महत्व

आजकल यह प्राय शत-प्रतिशत मामलों में देखा जाता है कि कन्या पक्ष यह जानते हुए भी कि वर पक्ष लड़की से अधिक पैसे को महत्व देकर सम्बन्ध कर रहा है, रिश्ता कर लेता है । लड़की के व्यक्तिगत दुःख-सुख से अधिक सामाजिक कुरीतियों को मान्यता दी जाती है । इसका कारण यह है कि आज भी लोगों के मन में स्त्री जाति के प्रति उपेक्षा की भावना है जो उन्हें विरासत में मिली है ।

लड़की का ससुरालवालों के प्रति सेवा भाव ससुराल वालों की उसके प्रति मनोभावनाओं पर ही निर्भर करता है । यदि वे उसे परिवार के सदस्यों की तरह ही स्वीकार करते हैं तो स्वाभाविक है कि एक शिक्षित लड़की का प्रेम व्यवहार उन्हें मिलेगा और यही लड़की का नैतिक कर्तव्य भी है, परन्तु यदि वे नये सदस्य की स्थिति का अनुचित फ़ायदा उठाना चाहें व बहू को उपयोग की वस्तु समझें तो स्थिति निश्चय ही उलट जायगी ।

हमारे रुढ़िवादी समाज की मान्यता के अनुसार वैवाहिक सम्बन्धों में लड़कों की सहमति को ही मान्यता दी जाती है । यह दृष्टिकोण एकपक्षीय है एवं स्त्री जाति के प्रति अन्याय है । पुरुष रूपी पहिये की धुरी स्त्री है अतः दोनों की मान्यता एवं अधिकार समान है । विवाह जैसे महत्वपूर्ण निर्णय में वर की ही नहीं वरन् कन्या की भी सहमति आवश्यक होनी चाहिए ।

लड़कियाँ एक जुट हों

एक अन्य लड़की के मनोभाव कुछ इस प्रकार प्रकट हुए—दहेज के लेन-देन को मैं अच्छा नहीं मानती । मेरी

ही तरह मेरे घरवालों का भी विचार है कि न तो बेटे के विवाह पर दहेज लेंगे और न बेटी के विवाह पर ही दहेज देंगे। दहेज के नाम पर माँगी जाने वाली मोटी रकम कन्यापक्ष से सिर्फ इसलिए माँगी जाती है कि वर इंजीनियर है या डाक्टर है। उसे पढ़ाने में जो भी पैसा खर्च हुआ है क्या वह कन्यापक्ष से माँगना उचित है? यदि उचित है तो क्या कन्या को उसके माता-पिता ने उच्च शिक्षा नहीं दिलायी है? अगर कायदे से देखा जाय तो लड़के से ज़्यादा पैसा लड़की के ऊपर खर्च होता है। फिर लड़के वाले ने अपने बेटे को पढ़ा-लिखाकर योग्य बना कर कन्या पक्ष या कन्या पर कोई एहसान नहीं किया, यह तो उसका कर्तव्य था जिसे उसने निभाया। अगर वह अपने बेटे को उँगली पकड़ कर उसे चलना सिखाता है, उसे पाल-पोस कर बड़ा करता है, पढ़ा-लिखा कर चार पैसे कमाने योग्य बनाता है तो वृद्धावस्था में यही पुत्र पिता का सहारा बनता है। कन्या के पिता ने भी यही सब किया परन्तु अपने लिये नहीं। कन्या तो दूसरे के घर चली गयी। वहाँ रह कर वह उस परिवार की एक पूँजी बन गयी। तब फिर दहेज क्यों? मेरा विचार है कन्या को खुद ऐसी जगह विवाह नहीं करना चाहिए जहाँ विवाह से पहले ही कन्या की योग्यता से ज़्यादा धन को महत्व दिया जाता हो, और यदि ऐसे धन के लोभियों से कन्या या कन्यापक्ष सहर्ष विवाह करने को तैयार हो जाते हैं तो दहेज का वास्तविक अपराधी वरपक्ष नहीं अपितु कन्या है, कन्यापक्ष है। यदि सारी लड़कियाँ एकजुट होकर यह निश्चय कर लें कि दहेज देकर विवाह नहीं करेंगी तो वरपक्ष को झुकना ही पड़ेगा और बहुत से घरों को योग्य बहुएं मिलेंगी और बहुत से घरों को योग्य दामाद जो अपनी संतति में आत्माभिमान की भावना भर सकेंगे।

लड़की के अवगुण भी बताइये

दहेज हत्याओं में कन्यापक्ष, खासकर कन्या के माता-पिता या भाई अहम भूमिका निभाते हैं। आज सरकार भी कहती है कि नारी स्वतन्त्र है, उसे पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। परन्तु नारी आज भी परतन्त्र है। उसे बचपन से बुढ़ापे तक सहारे की जरूरत है। वह सहारा पिता, भाई, पति और पुत्र का हो सकता है। उसके लिये बिना सहारे के एक कदम भी चलना सम्भव नहीं। पुराने समय से ही कन्या के जन्म पर माता-पिता में मातम मना लेने की मानसिकता है क्योंकि उन्हें कन्या के विवाह के समय वरपक्ष के सामने झुकना पड़ता था। यही कारण था कि ठाकुर कन्या के जन्म होने पर ही उसे मार देते थे। विवाह के अवसर पर लड़की को उसके माता-पिता अपनी खुशी से अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार अपनी सम्पत्ति में से कुछ हिस्सा एक साथ ही उसके विवाह पर दे देते थे। तब उनसे इसकी माँग नहीं की जाती थी, और न देने पर जबरदस्ती वसूली भी नहीं की जाती थी।

कन्यापक्ष का दूसरा दोष होता है लड़की के विवाह के पूर्व जरूरत से ज्यादा उसके गुणों का बखान कर देना और साथ ही अपनी सम्पन्नता का झूठा प्रदर्शन करना, भले ही यह सम्पन्नता पड़ोसियों से, रिश्तेदारों से उधार माँगी हुई हो। ये सारी बातें लड़की को उसके ससुराल में प्रवेश करने पर झेलनी पड़ती हैं। मसलन सास-ससुर और पति के मस्तिष्क पर जो छवि कन्यापक्ष अंकित कर देता है लड़की उसमें खरी नहीं उतरती। माता-पिता कहते हैं लड़की चार बजे सुबह उठ जाती है, खाना बहुत अच्छा बनाती है, मृदुभाषी सुशील है जब कि लड़की आठ बजे से पहले सोकर उठती नहीं है, चौके में कभी गयी भी नहीं, ज़रा सी बात में झनझना उठती है। ऐसे में वरपक्ष की गलती कम कन्यापक्ष की गलती ज़्यादा है। कन्या के गुणों के साथ-साथ उसके अवगुणों को भी बताइये, छिपाने से सबसे ज्यादा परेशानी कन्या को होती है। वह एक तो नया परिवेश, अजनबी लोग होने की वजह से पहले से ही घबराई सकुचायी होती है, फिर यदि नये माहौल में उसे प्यार की जगह उपेक्षा मिली तो वह घबराकर गलतियाँ करने लगती है और जब तनाव हद से ज़्यादा हो जाता है तो आत्महत्या तक कर लेती

हैं। कुछ मामले दहेज से सम्बन्धित अवश्य होते हैं। परन्तु दिन-प्रति-दिन होने वाली सारी आत्महत्याओं का मूल दहेज ही है ऐसा नहीं बल्कि उसकी तह में अनेक कारण छिपे होते हैं जिनकी बारीकी से जाँच नहीं की जाती और दहेज हत्या का नाम दे दिया जाता है।

ससुराल में आकर कन्या खुद को अकेला महसूस करती है वह ससुराल वालों का आदर-सम्मान व प्यार पाने के लिये भरसक प्रयत्न भी करती है। परन्तु यदि लड़की मुँहमांगा दहेज लेकर आयी है तब वह क्यों परवाह करे, उसने तो ससुराल को पूरी कीमत देकर लड़का खरीदा है अब आप क्यों परेशान होती हैं कि बहू के आने से बेटा भी पराया हो गया। परन्तु बेटा कब पराया था, उसे तो आपने ही बोली लगाकर बाजार में बेचा है? अगर इस खरीदारी को बन्द कर दिया जाय तो रिश्तों की टूटती दीवारों को मजबूती दी जा सकती है। इस खरीदारी को बन्द करने के लिये कन्या को या कन्यापक्ष को ही पहल करनी पड़ेगी, उसीने इस अपराधिक प्रवृत्ति की शुरुआत की है अतः उसीको आगे आना पड़ेगा।

—'मुकुल'

यह अपमान कन्यायें कब तक सहती रहें?

आर्यों के चारित्रिक उत्थान का वह स्वर्णयुग था जब कन्याओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। भारतीय ऋषियों ने यह व्यवस्था निर्धारित की थी कि प्रत्येक गृहस्थ के यहाँ नवरात्रि की समाप्ति पर कुमारी-पूजन होता था। कुमारी कन्यायें— वह किसी भी वर्ण की क्यों न हो[1] — निमन्त्रित की जाती थीं, उन्हें इच्छानुकूल भोजन कराया जाता था, सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा दी जाती थी, और उनके चरण स्पर्श कर सुख, समृद्धि तथा सौभाग्यपूर्ण होने का आशीर्वाद लिया जाता था। घर के बच्चे यह सब देखते थे, कन्याओं का आदर करने की उनमें भावना जाग्रत होती थी और इस प्रकार उनके चरित्र का निर्माण होता था। आज वह सब बातें स्वप्न हो गयीं। पाश्चात्य भोगवादी सभ्यता ने सब कुछ नष्ट कर दिया।

आज अपने को ऋषियों की सन्तान कहने वाले और उच्चकुल का होने का दावा करने वाले लोग कितना नीचे गिर गये हैं और कन्याओं का अपमान करने पर कहाँ तक उतर आये हैं यह देखकर आश्चर्य होता है। एक बर के पिता कन्या के पिता को लिखते हैं—

... ...
... ...

प्रिय श्री ... ... जी !   30-5-87

आपके दिनांक 23-5-87 के पत्र के उत्तर में मैंने कल 29-5-87 को पत्र भेजा है—परन्तु चूँकि सम्भवतः मैं पता लिखते समय ... लिखना भूल गया हूँ—इससे हो सकता है मेरा वह पत्र ... पहुँच कर इधर-उधर हो जाय। अतः मैं पुनः पत्र repeat कर रहा हूँ-केवल मात्र इस लिए कि अनेक proposals के दबाव

---

[1]पौराणिक साहित्य का अवलोकन करने पर कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि कन्याओं का वर्ण वह नहीं माना जाता था जिसमें उनका जन्म होता था। वरन् वह जो उनके पति का होता था। संस्कारों के जाग्रत होने पर अपनी आन्तरिक भावनाओं तथा मनोवृत्तियों के वशीभूत हो वह जिस वर्ण के वर का वरण करती थी उसी वर्ण की वह मान ली जाती थी।

कितना सुन्दर स्वागत होता है कन्या का उसके संसार में पदार्पण करते ही !

कन्या धीरे-धीरे बड़ी होती है तो क्या लाड़-प्यार में, क्या खिलायी-पिलायी में, क्या पहनने-ओढ़ने में, क्या लिखायी-पढ़ायी में, सभी बातों में उसके भाइयों को उससे अधिक सुविधायें दी जाती हैं। पढ़-लिख कर विद्यालय से घर आने पर उसे गृहस्थी के कामों में जोत दिया जाता है जबकि उसके भाइयों से शायद ही कभी एक गिलास भी धोने को कहा जाता हो। और यह सब कौन करता है ? उसकी माता—एक नारी।

लड़का चाहे जितना बिगड़ गया हो, चाहे कोई भी दुष्कर्म करके क्यों न आये परन्तु वह माता की आँखों का तारा बना रहता है मगर यदि बालिका किसी से सहज भी हंस कर बोल दे तो उस पर दुश्चरित्रता का दोष मढ़ दिया जाता है। उसे लाञ्छित करने वाला भी होता है प्रपञ्ची नारी समाज ही जिसके मुख से इस प्रकार पुष्पवर्षा आरम्भ हो जाती है—

"अरे कुछ सुनेव ? फलाने कि बिटिया कालिह मुंह अंधेरे फलाने धतिगड़ा के साथ खूब घुलि-मिलि कै बातैं कइ रही रहै। हमका उहिके लच्छन कुछ ठीक नाहीं देखाइं देत।"

पिता यदि कभी पुत्री का पक्ष लेता है तो माता—यदि अधिक दुर्बुद्धि की न हुई तो—इतना तो कहती ही है कि "क्यों लड़की को बिगाड़ने पर लगे हो, उसे पराये घर जाना है ?"

चढ़ावा आता है तो दस घर से आयी हुई स्त्रियां उसे देखती हैं और अगर उनकी निगाह में आये हुए जेवर न चढ़े तो कह देती हैं—"पता नहीं किस कंगाल के घर में लड़की का सम्बन्ध तय करके आये हैं।"

बिवाह होता है तो लड़की को जैसे आजन्म कारावास दिया जाता है। उसकी माता उसे शिक्षा देती है—"बेटी ! याद रखना लड़की डोली में चढ़कर पति के घर जाती है और अरथी पर चढ़ कर पति के घर को छोड़ती है।"

पति-गृह में वह पहुंची नहीं कि उसकी एक-एक बात पर ध्यान दिया जाने लगता है। कोई उसके चेहरे-मोहरे की निरीक्षा-परीक्षा करती है तो कोई चाल-ढाल की। कोई उसके उठने-बैठने को गौर से देखती है तो कोई हंसने-बोलने को। सास और ननंद काम-काज करने के ढङ्ग पर अधिक ध्यान देती हैं। किसी-न-किसी बात में तो कमी निकल ही आती है—सर्वगुणसम्पन्ना भला हो ही कौन सकती है ? बस, आलोचना का दौर आरम्भ हो जाता है। सास आये दिन कहना आरम्भ करती है—

"का लायी हौ अपने बाप के घर से ? ...... कउनी बात पर एत्ती ठसक देखउती हौ ? ...... का महतारी-बाप यहै सिखाइन है ? ...... उनका यू कुलच्छनी हमरेन माथे मढ़ि क रहै ? ...... "

इस प्रकार नारी समाज बात-की-बात में कुल-लक्ष्मी को कुलक्षणी घोषित कर देता है। यही नहीं, अगर कहीं ससुर ने बहू के पक्ष में भूल से कभी कुछ बोल दिया तो उसे भी सुनना पड़ जाता है—

"बहुरिया जवान है, सुन्दर है, काहे न उहिकी तरफदारी करिहो ......।"

और ...... और अन्त होता है स्टोव के फटने से अथवा तथाकथित आत्मदाह से। न्यायाधिकारियों को यहां भी जो सूत्र मिलते हैं उनका सञ्चालन मुख्य रूप से नारी ही करती पायी जाती है—वह चाहे सास हो, चाहे ननंद हो, चाहे दोनों हों।

— ० —

प्राचीन भारतीय साहित्य

[लेखक— डॉ० विद्यानिवास मिश्र]

प्राचीन भारतीय साहित्य के प्रमुख अङ्ग हैं— १. वेद, २. स्मृति, ३. आगम, ४. पुराण तथा ५. इतिहास।

वेद— मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के द्वारा साक्षात्कार किये गये सत्य का ही नाम वेद है। इसको सुन कर ग्रहण किया जाता है, इसलिये इसका नाम श्रुति भी है। यह अनादि काल से चला आ रहा है इसीलिये इसका नाम निगम है। अब प्रश्न उठता है कि वेद कितने हैं। वेद वस्तुतः एक है, किन्तु वैदिक परम्परा की रक्षा के लिये वेदव्यास ने चार शिष्यों के लिये अलग-अलग समूहों में मन्त्रों का राशिकरण किया एवम् चार मन्त्र राशियाँ बनायीं। इन्हीं का नाम क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद हुआ। ऋग्वेद ऋचाओं का संग्रह है। इन ऋचाओं का विषय मुख्य रूप से देवता का आह्वान करना है। इसलिये इस वेद के मन्त्रों का उपयोग 'होता' अर्थात् हवन करने वाला पुरोहित करता है। यजष का अर्थ है यज्ञ के कर्मकाण्ड का प्रकार बतलाना। यजुर्वेद के दो रूप हैं— शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद। यजुर्वेद का उपयोग करने वाला पुरोहित 'अध्वर्यु' कहलाता है। सामवेद ऋचाओं का गान के रूप में रूपान्तर है। अधिकतर इसमें ऋग्वेद के ही मन्त्र संग्रहीत हैं। इसका गायन करने वाला पुरोहित 'उद्गाता' कहलाता है। अथर्ववेद रहस्य विद्या और अनेक प्रकार के अनुष्ठानों का निर्देश देने वाले मन्त्रों का संकलन है। इसका पुरोहित इसीलिये 'ब्रह्मा' कहलाता है क्योंकि इसमें ऊपर के तीन वेदों का समाहार हो जाता है।

प्रत्येक वेद के चार भाग हैं — १. मन्त्र, २. ब्राह्मण, ३. आरण्यक, और ४. उपनिषद्।

१. मन्त्र का अर्थ है मनन या ध्यान करने का साधन। प्रत्येक मन्त्र के एक निश्चित ऋषि होते हैं, देवता होते हैं और यदि वह गद्य नहीं है तो उसका छन्द भी होता है। प्रत्येक मन्त्र का एक विनियोग होता है। प्रत्येक मन्त्र के पहले प्रणव अर्थात् ओऽम्कार जोड़ा जाता है। प्रणव आर्थात् ओऽमकार का अर्थ है 'वह जो हमेशा नया रहे'। यह अ, उ, म् इन तीन अक्षरों के योग से बना है। अ ब्रह्मा का, उ विष्णु का, तथा म् शिव का रूप है। एक दूसरी व्याख्या के अनुसार अ विराट् का, उ सूक्ष्म का, और म् दोनों के सम्मिलन का रूप है। इस ओऽम्कार को सृष्टि का आदि नाद माना जाता है। इसका उच्चारण प्लुत होता है अर्थात् मात्रा लम्बी होती है— खींच कर उच्चारित की जाती है। वेदों के इस मन्त्र भाग को संहिता कहते हैं।

२. ब्राह्मण— मन्त्र का एक दूसरा नाम 'ब्रह्म' भी है। कर्मकाण्ड के संदर्भ में मन्त्र के अर्थ की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ 'ब्राह्मण' कहलाता है। ऋग्वेद में ऐतरेय और कौषीतकि, शुक्ल यजुर्वेद में शतपथ, कृष्ण यजुर्वेद में तैत्तरीय और काठक, सामवेद में जैमिनीय, तथा अथर्ववेद में गोपथ प्रसिद्ध ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।

३. आरण्यक— गृहस्थ आश्रम से विरक्त अरण्यों में निवास करने वाले मुनियों ने मन्त्रों के अनुष्ठान के पीछे छिपे प्रयोजन पर चिन्तन किया, वही चिन्तन आरण्यक हैं। मुख्य आरण्यक हैं—बृहदारण्यक (शुक्ल यजुर्वेद), तैत्तरीय (कृष्ण यजुर्वेद), छान्दोग्य (सामवेद)।

४. उपनिषद् का अर्थ है गुरु के पास बैठकर अर्जित किया गया ज्ञान। इस प्रकार उपनिषद् गहरी साधना के अनन्तर गुरु की प्रेरणा से अन्तर में स्फुरित सत्य का साक्षात्कार है। यह वेद का अन्तिम भाग होने

के कारण वेदान्त भी कहा जाता है। इसके मुख्य विषय सृष्टि का रहस्य, जीवन का रहस्य, जीवन का चरम पुरुषार्थ, एकत्व की खोज, आत्मा और ब्रह्म के बीच एकत्व की प्राप्ति है। मुख्य उपनिषद हैं ऐतरेय, कौषीतकि, छान्दोग्य, श्वेताश्वतर, मुण्डक, कठ, केन, ईशावास्य, तैत्तिरीय, प्रश्न तथा बृहदारण्यक, जो उपनिषद् एवं आरण्यक एक साथ हैं।

५. स्मृति— स्मृति का अर्थ है ऋषियों-मुनियों की सभा द्वारा स्मरण के आधार पर वर्णित आचार-पद्धति का संकलन; दूसरे शब्दों में परम्परा से प्राप्त ज्ञान का वह स्मरण जो समय-समय पर तत्व विचारक ऋषियों की सभा में एकत्र किया गया है।[1] स्मृति का विषय धर्म और आचार का समस्त क्षेत्र है। इसके अन्तर्गत नित्य और नैमित्तिक धर्म का विवेचन है, साथ ही साथ व्यवहार धर्म का भी विवेचन है। स्मृतियाँ और उनकी टीकायें ही कानून व्यवस्था के लिये प्रमाण रही हैं। मुख्य स्मृतियाँ, आचार की दृष्टि से मनु की और व्यवहार की दृष्टि से याज्ञवल्क्य की हैं। इनके अलावा अन्य स्मृतियाँ हैं नारद स्मृति, पाराशर स्मृति, गौतम स्मृति, वसिष्ठ स्मृति, बृहस्पति स्मृति, शङ्ख स्मृति, तथा लिखित स्मृति। इन स्मृतियों का आधार वेद हैं अथवा वेद के अङ्गभूत गृह्य सूत्र —मुख्य रूप से आपस्तम्ब, पारस्कर और आश्वलायन, गोभिल गृह्यसूत्र तथा गौतम और बोधायन के धर्मसूत्र हैं।

पुराण— पुराण और इतिहास वेद के अर्थ की ही विशद व्याख्या हैं। यह व्याख्या साधारण लोगों के लिये लिखी गयी है इसलिये इसमें कथा और कल्पना की युक्ति का एवम् सादृश्य का सहारा लिया गया है। पुराण का अर्थ है कि 'जो पुराना होते हुए भी नया हो'। यथार्थ में पुराण भिन्न-भिन्न प्रकार की गाथाओं के द्वारा धर्म के मूल अर्थ की व्याख्या करते है। वेदव्यास ही अठारह पुराणों व महाभारत के रचयिता है। ये पुराण साधारण सभाओं में सुनाये जाते थे और कथावाचक उनमें समय-समय पर अपनी कल्पनायें भी जोड़ते थे। यह आधार काफ़ी पुराना है।

पुराणों का मुख्य विषय है सृष्टि का वर्णन, सृष्टि के इतिहास का वर्णन, सृष्टि, स्थिति और प्रलय का वर्णन, भूगोल का वर्णन, भारत भूमि के इतिहास का वर्णन अवतारों का वर्णन, धर्म और आचार के बिन्दुओं का सोदाहरण निरूपण। अठारह महापुराण और उससे भी अधिक संख्या में उपपुराण हैं। मत्स्य, कूर्म, वामन, वाराह, पद्म, ब्रह्मवैवर्त, विष्णु, भागवत, गरुड़, नारद, भविष्य, लिङ्ग, स्कन्द, शिव, मार्कण्डेय, ब्रह्म, अग्नि, तथा ब्रह्माण्ड पुराण ये अठारह महापुराण हैं। उपपुराणों में मुख्य है वायुपुराण तथा नृसिंह पुराण।

इतिहास— वाल्मीकीय रामायण और महाभारत वास्तव में प्राचीन भारत के रोचक ढङ्ग से लिखे गये इतिहास हैं। इतिहास और पुराण में विषय-वस्तु प्रायः समान है। अन्तर केवल इतना है कि रामायण तथा महाभारत में रामावतार और कृष्णावतार की कथायें मुख्य केन्द्र में है। रामायण में राम की कथा और महाभारत में कृष्ण की कथा है। महाभारत के दो भाग हैं— महाभारत (अठारह पर्वों का) और हरिवंश। हरिवंश को

[1]आजकल जिस प्रकार संसद तथा विधान सभाओं में प्रवर समितियाँ प्रतिवेदन तय्यार करती हैं, उसी प्रकार ऋषियों की अध्यक्षता में समय समय पर सभायें बैठीं और स्मृतियों का निर्माण किया गया। स्मृतियों में जहाँ संकेत नहीं मिलता है वहाँ श्रुतियों के आन्तरिक अर्थ के अनुकूल जो वाक्य होते हैं वे ही प्रमाण हो जाते हैं।

—लेखक

पुराण भी कहा जाता है। हरिवंश में श्रीकृष्ण की लीला आदि से अन्त तक वर्णित है। महाभारत में कौरवों और पाण्डवों के संघर्ष की कथा और बीच-बीच में अनेक प्राचीन आख्यान हैं। रामायण व्यक्ति के आदर्श का नमूना प्रस्तुत करता है। महाभारत सामाजिक कर्त्तव्य के दायित्व का प्रतिमान उपस्थित करता है। दोनों ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर धर्म का सूक्ष्म विवेचन है और साथ ही साथ दोनों ग्रन्थ काव्य भी हैं। यही कारण है कि इन दोनों ग्रन्थों का बहुत गहरा प्रभाव हिन्दू जनता पर तो पड़ा ही है भारत के बाहर भी दूर-दूर तक इनका प्रभाव पड़ा है। महाभारत में तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनसे सम्बन्धित कोई भी विषय छूटा नहीं है। यह भारतीय प्रज्ञा का विश्वकोष है।

बाल्मीकीय रामायण में सात काण्ड हैं— बाल काण्ड, अयोध्या काण्ड, अरण्य काण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड और उत्तर काण्ड। महाभारत में अठारह पर्व हैं— आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महाप्रास्थानिकपर्व तथा स्वर्गारोहणपर्व। इसके अतिरिक्त इसका परिशिष्ट भाग हरिवंशपुराण है।

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का ही एक अंश है। इसे हिन्दू धर्म की आधार-शिला माना जाता है। जब कौरवों और पाण्डवों का युद्ध प्रारम्भ हुआ तो अर्जुन यकायक कातर हो गये और युद्ध से विरक्त होने लगे। उस समय उनके सारथि बने श्रीकृष्ण ने उन्हें कर्म, ज्ञान और भक्ति का उपदेश दिया। गीता के अठारह अध्याय छ-छः के तीन वर्गों में बँटे हैं जो क्रमशः कर्म, भक्ति और ज्ञान का उपदेश करते हैं। वस्तुतः तीनो मार्ग अलग नहीं हैं। तीनों का समुच्चय ही गीता का अभिप्राय है। श्रीमद्भगवद्गीता में निष्काम कर्मयोग का उपदेश दिया गया है और भगवद्भक्ति और तत्वज्ञान को इसके लिये आवश्यक बताया गया है। गीता का मुख्य मन्तव्य अहंकार की बुद्धि का त्याग है और बिना फल की इच्छा किये कार्य की निरन्तर साधना करना है। इसमें विराट जीवन से अपने लघु जीवन को जोड़ने का उपाय बतलाया गया है। जो निरन्तर चित्त की शुद्धि के उपाय से, भगवद्-भावना से समस्त प्राणियों के कल्याण के संकल्प से तथा अपनी सीमा और अपने दायित्व के प्रति सजग रहने से ही सम्भव होता है।

आगम— आगम का अर्थ है गुरु क्रम या परम्परा क्रम से प्राप्त ज्ञान। इसीलिये इसके अन्तर्गत स्मृति, पुराण, इतिहास भी आते हैं। पर मुख्य रूप से आगम वे हैं जो इष्ट देवताओं की साधना का सोपान बतलाते हैं। पाञ्चरात्र संहिता, अहिर्बुध्न संहिता, सात्वत संहिता, वैखानस आगम ये मुख्यरूप से वैष्णव आगम हैं। रुद्रयामर, मृगेन्द्रतन्त्र आदि शैव आगम हैं। नित्या, षोडशीकार्णव, कालिकागम, मालिनी विजय आदि शाक्त आगम हैं। आगमों का विषय मन्त्र विद्या, तन्त्र विद्या, देवार्चन विधि आदि हैं। इन्हीं का दूसरा नाम तन्त्र भी है।

— o —

रत्न–कण

हमारे लिये सबसे अधिक गर्व की बात यह नहीं कि हम कभी गिरे नहीं बल्कि यह कि हम जब भी गिरे तो तुरन्त उठ खड़े हुए। —गोल्डस्मिथ

हम उस मुकाम से गुज़रे हैं सर उठाये हुए।
अदब से झुक के जहाँ आसमाँ गुजरता है॥ —अज्ञात

बच्चों के लिये

नेपोलियन बोनापार्ट

[लेखक—श्री अरविन्द मिश्र, एम० ए०]

बच्चो ! विश्व का इतिहास वीरों के असंख्य आख्यानों से भरा पड़ा है। इन वीरों में कुछ ऐसे भी महापुरुष हुए हैं जिनकी दृढ़ता के सामने परिस्थितियाँ झुकती चली गयीं, घटनाओं को नये मोड़ लेने पड़ गये, और भविष्य जैसे उनके इशारों पर बनता संवरता चला गया। ऐसे ही वीर महापुरुषों में से एक थे नेपोलियन बोनापार्ट जो अपने असाधारण आत्मबल, अनुपम साहस, असीम दृढ़ता तथा अतुलनीय शौर्य के कारण एक साधारण कॉर्सिकन की हैसियत से उठ कर फ्रांस के राज्य सिंहासन तक जा पहुंचे। कैसे ? ... सुनो !

(ध्वन्यात्मक परिवर्तन)

नेपोलियन—क्या है जेनरेल मेरेट ?

मेरेट— क्षमा करें सम्राट् ! लाँ रॉदियेर में जेनरेल ब्लूशर की विजय ने हमारे सैनिकों का साहस तोड़ दिया है। ब्लूशर पेरिस की ओर बढ़ता ही चला आ रहा है। मेरे विचार से बुद्धिमानी इसीमें है कि हम विपक्षियों की शर्तें मान लें और उनसे सन्धि कर लें।

नेपोलियन—संधि की शर्तें क्या हैं ?

मेरेट— हमें बेल्जियम पर से अपना अधिकार हटा लेना होगा, र्हाइन नदी के बायें तट के सारे प्रदेश को स्वतन्त्र कर देना होगा, इटली से अपनी सेनायें वापस बुला लेनी होंगी, और ...

नेपोलियन— अर्थात् हमने जितना कुछ भी अब तक जीता है वह सब छोड़ देना होगा। यही न ?

मेरेट—जी !

नेपोलियन— हूं ! ··· कॉलेनकोर्ट ने भी अपने पत्र में कुछ इसी प्रकार के विचार प्रकट किये हैं। ... परन्तु मेरेट ! तुम्हें मालूम है कि मॉण्टेस्क्यू ने क्या कहा है ?

मेरेट— मैं नहीं कह सकता सम्राट् कि आपका संकेत उनके किस कथन की ओर है।

नेपोलियन— मॉण्टेस्क्यू का कहना है कि 'ऐसी अपमानपूर्ण शर्तें मान लेने की अपेक्षा—जिन पर कि एक साधारण जेनरल भी विचार करना उचित न समझेगा—एक सम्राट् के लिये यह निश्चय कर लेना अधिक श्रेयस्कर होगा कि वह अपने राज्यसिंहासन के ध्वस के नीचे दब कर अपने प्राणों की आहुति दे दे।

मेरेट— परन्तु सम्राट् ! इस निश्चय से कितनी क्षति होगी इस पर भी तो विचार करना आवश्यक है। विपक्षियों की सम्मिलित शक्ति के सामने हमारा ठहर पाना असम्भव है।

नेपोलियन— मेरेट ! मेरे शब्द-कोष में 'असम्भव' शब्द का अस्तित्व नहीं ! भविष्य में मेरे सामने इस शब्द का प्रयोग न किया जाय। बोलो ! याद रहेगा ?

मेरेट— याद रहेगा श्रीमन् !

नेपोलियन— और सुनो ! ब्लूशर ने यदि पेरिस पर आक्रमण करने का दुःसाहस किया तो उसे बुरी

(शेष पृष्ठ १७ पर)

एक नन्हाँ पौधा

[लेखक— श्री विज्ञानभिक्षु, एम० एस-सी०]

आओ बच्चो आज तुम्हें एक कहानी सुनायें—एक नन्हे पौधे की बड़ी ही मनोरञ्जक कहानी। जानते हो ? यह कहानी उस पौधे ने ही मुझे सुनाई थी। मैं अपनी फूलों की क्यारी के पास बैठा हुआ था, हाथ में खुरपी थी और गुलाब के पौधों आस-पास उग आयी घास-फूस और जंगली पौधों को निकाल-निकाल कर अलग रख रहा था। एक पौधा मुझे कुछ अजीब सा लगा-कुछ-कुछ पहचाना सा। मेरा हाथ रुक गया, मैं सोचने लगा कि आखिर यह कौनसा पौधा हो सकता है। तभी उसकी नन्हीं-नन्हीं दोनों पत्तियाँ हिलीं--शायद हवा के झोंके से—हिल कर एक में जुड़ीं, जैसे मुझे प्रणाम किया हो। दो ही पत्तियाँ थीं ही उसमें उस समय तक। दोनों पत्तियों के बीच एक नन्हाँ सा कल्ला फूट रहा था, जैसे सर उठाकर वह पौधा अपने चारो ओर के वातावरण को आश्चर्य से देख रहा हो। मैं विचारों में डूब गया, तभी मुझे एक हल्की सी कोमल आवाज़ सुनाई दी—

'मुझे पहचानने की कोशिश कर रहे हैं ? मैं चिलबिल हूं। हाँ चिलबिल, जिसकी घनी छाया में आप अक्सर बस के इन्तज़ार में जा कर खड़े होते हैं। आप सोच रहे होंगे कि मैं यहाँ कैसे आ गया। सुनिये ! जब मेरी नन्हीं सी बीजी जड़ और बीजी अंकुर दोनों ही पुष्ट हो गये तो मेरे पिता वृक्ष की इच्छा हुई कि मैं भी उन्हीं की तरह कहीं दूर जा कर अपना स्वतन्त्र जीवन आरम्भ करूं। पिता ने—और उन्हीं को मेरी माता भी समझ लीजिये—मेरे परदेश जाने का पूरा प्रबन्ध करना आरम्भ किया। जब तक मैं दूसरी जगह पहुंच कर अपनी जड़ें न जमा लूं तब तक के लिये उन्होंने मेरे लिये भोजन का प्रबन्ध किया, हवा में उड़ते हुए मैं परदेश जा सकूं

(पृष्ठ १६ का शेषांश)

तरह कुचल दिया जायगा। ··· कितने सैनिक हैं इस समय पेरिस की रक्षा के लिये ?

मेरेट— कुल पचास हज़ार।

नेपोलियन— और ब्लूशर के पास कितनी सेना होगी ?

मेरेट— हमारी सेना से कम-से-कम तिगुनी।

नेपोलियन— कोई बात नहीं। फ्रांस के पास इस समय हैं पचास हज़ार सैनिक और एक मैं—कुल मिला कर एक लाख पचास हज़ार। जाओ, युद्ध की तैयारी करो।

मेरेट— परन्तु सम्राट् ! क्या आपका स्वयं मोर्चे पर जा कर युद्ध करना उचित होगा ?

नेपोलियन— मेरेट ! जो मुझे मार सके वह तोप का गोला अभी ढाला नहीं जा सका है।

(ध्वन्यात्मक परिवर्तन)

और जानते हो बच्चो ! इस बातचीत के बाद अगले नौ दिनों में नेपोलियन के साथ जेनरल ब्लूशर की छः लड़ाइयाँ हुईं और अपनी तिगुनी सैनिक शक्ति के होते हुए भी वह नेपोलियन से बराबर हारता ही चला गया।

— ० —

इसके लिये उन्होंने मेरे दो पंख लगा दिये। फिर मेरे शरीर का सारा बेकार का पानी सोख कर मुझे हल्का भी बना दिया। जब यह सब तैयारी पूरी हो गयी और एक दिन तेज आँधी आयी तो उन्होंने अपनी डालें हिला कर मुझे विदा किया।......

इतना कहते-न-कहते नन्हें पौधे की आवाज कुछ भारी हो आयी, शायद उसे अपने माता-पिता के प्यार-दुलार की बात याद हो आयी थी। मैं सोचने लगा—

'हम भी तो यही करते हैं। जब हमारा बच्चा पढ़-लिख कर सयाना हो जाता है और उसे हम नौकरी के लिये बाहर भेजते हैं तो उसके लिये रास्ते में खाने के लिये पूड़ी, सब्जी, मिठाई आदि कटोरदान में रखवा देते हैं। कतली, खुरमे, नमकपारे आदि बनवा कर डब्बों में भर कर दे देते हैं जिससे वह जब तक परदेश में पहुँच कर अपनी जड़ न जमा ले और अपना सारा प्रबन्ध स्वयं न करने लग जाय तब तक थोड़ा-बहुत खाता पीता रहे। रेल या बस का किराया.. ... ।'

मेरा ध्यान टूटा, नन्हां पौधा फिर बोलने लगा था—

'मेरी ही तरह और भी बहुत से पौधे हैं जिनके नन्हें बच्चे हवा के झकोरों के पालने पर बैठ कर परदेश की यात्रा करते हैं। शीशम के बीज के मेरे ही जैसे पंख होते हैं। गर्मियों के दिनों में मकड़ी के पैरों की तरह चारों तरफ सफेद रेशों के सैकड़ों पैर फैलाये आक और मदार के बीजों को आपने उड़ते देखा होगा। सेमल और कपास के बीज भी इसी तरह लम्बे-लम्बे रेशों का हवाईजहाज बनाये दूर-दूर की यात्रा करते हैं। लीजिये, कहाँ मैं नन्हें पौधों की बात कर रहा था और कहाँ बीजों की बात करने लगा। मगर यह गलत नहीं, नन्हां पौधा, उसके साथ उसके लिये इकट्ठा कर दिया गया भोजन, और दोनों की सुरक्षा के लिये चारों ओर से घेरे हुए छिलका यह सब मिला कर ही तो बीज कहलाते हैं।

'फिर, सभी बीजों के अन्दर बैठे हुए नन्हें पौधों के मेरी ही तरह के पंख तो नहीं होते। मगर उन्हें भी अपने माता-पिता का स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाना पड़ता है। इसके लिये उन्हें जानवरों का सहारा लेना पड़ता है। जानवर यह काम तभी करेंगे जब उन्हें इसके लिये कुछ मिले। वृक्ष इसका भी प्रबन्ध करते हैं। वह अपने बीजों के चारों तरफ खट्टे, मीठे, चरपरे यानी अलग-अलग स्वाद के कुछ और भी पदार्थ इकट्ठे कर देते हैं। ये पदार्थ उन प्राणियों के खाने के लिये होते हैं जिनसे वृक्ष अपने बीजों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का काम लेते हैं। जैसे आम को ही ले लीजिये। आम की गुठली आम का बीज है। गुठली की जाली बीज का आवरण यानी छिलका है। इस जाली से घिरा हुआ उसके भीतर सुरक्षित आम का नन्हां पौधा भी है और पौधे के लिये आवश्यक भोजन भी। यह गुठली अपने आप कहीं नहीं जा सकती। आदमी इस गुठली, यानी आम के बीज को अच्छी जमीन में बोता है, उसे खाद और पानी देता है, जानवरों से उसकी रक्षा करता है, और उसे बीमारियों तथा कीड़ों से बचाता है। इस सब सेवा के बदले में आम उसे उपहार में मीठा रस और गूदा खाने को देता है। यह रस और गूदा आम की गुठली के अन्दर उपस्थित नन्हें पौधे का भोजन नहीं, बल्कि यों समझ लीजिये कि एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का किराया है और नौकरी की तनख्वाह है। आम की गुठली यानी बीज, आपके खाने के लिये मीठा गूदा, और इन सबकी रक्षा के लिये गूदे से भी बाहर उपस्थित एक और छिलका, यह सब मिल कर फल कहलाते हैं।......

वह नन्हां पौधा और भी बहुत सी बातें कहता रहा और मैं बड़े ध्यान से सब कुछ सुनता रहा। तभी नन्हें पौधे ने अपनी बात बदली, बोला—

'हाँ ! तो वृक्ष से विदा होकर आँधी के झोंकों के साथ उड़ता हुआ मैं यहाँ आपकी इस गुलाब की क्यारी में आ पहुँचा । मुझ पर थोड़ी धूल पड़ी और बादलों के हलके छींटे भी । मुझे ऐसा लगा जैसे धरती माता ने मुझे अपने झीने आँचल से ढक लिया हो । थोड़ी ही देर में आँधी भी चली गयी और बादल भी छँट गये, धूप ने तेज़ी पकड़ी और हवा गरम हो उठी । मैं इतने लम्बे सफ़र से थक गया था इसलिये मुझे आराम की ज़रूरत थी । मैं सो गया, कब तक सोता रहा, कितने दिनों तक सोता रहा, मुझे कुछ याद नहीं । तभी एक दिन ठण्डी हवायें चलने लगीं, पानी बरसा, और तरावट पा कर मेरी रग-रग में बिजली सी दौड़ गयी । मैं फूला न समाया और बीज के छिलके से बाहर निकलने का प्रयत्न करने लगा । पहले मैंने अपना पैर बाहर निकाला जिसे आप जड़ कहते हैं और फिर उस जड़ से नयी-नयी और जड़ें उत्पन्न कर अपने चारों ओर की मिट्टी की परीक्षा करने लगा कि मुझे कहाँ-कहाँ पर मेरी आवश्यकता के लिये पानी और खाना बनाने के लिये ज़रूरी नमक आदि मिल सकते हैं । फिर मैंने अपना सिर भी बीज से बाहर निकाला और प्रकाश पाने के लिये मिट्टी से ऊपर आने का प्रयत्न करने लगा । जो भोजन मेरे माता-पिता ने बीज में रख कर मुझे दिया था वह तेज़ी से ख़त्म हो रहा था इसलिये मेरे लिये यह ज़रूरी था कि मैं धरती की सतह से जल्दी-से-जल्दी ऊपर पहुँचूँ और हरी पत्तियाँ उत्पन्न कर जड़ों के द्वारा पानी और आवश्यक नमक उनमें पहुँचाऊँ जिससे वह सूर्य की शक्ति के सहारे मेरे लिये भोजन बनाने लगें । परसों मैं अपने प्रयत्न में सफल हुआ, मुझे सूर्य का प्रकाश देखने को मिला और आज इन दो पत्तियों ने खुल कर मेरे लिये भोजन भी बनाना शुरू कर दिया है ।

'हाँ ! अपने चारो ओर देख कर मैं समझ रहा हूँ कि आप मुझे इस क्यारी में नहीं लगा रहने देंगे । कोई बात नहीं, एक प्रार्थना आपसे अवश्य है कि मुझे उखाड़ कर मत फेंकिये बल्कि किसी ऐसी जगह पर लगा दीजिये जहाँ मैं बढ़ता रह सकूँ, क्योंकि बढ़ने पर मैं राहगीरों को छाया दूँगा, पत्तियों से जल की भाफ निकाल कर पास-पड़ोस के वातावरण को ठण्ढा रखूँगा, आप साँस के साथ जो कार्बन डाईऑक्साइड बाहर निकालते हैं उसे सोख कर बदले में ऑक्सिजन दूँगा, जो टहनियाँ या शाखायें सूख जायेंगी वह आपके ईंधन के काम में आयेंगी, बच्चे मेरी डालों पर झूला डाल कर झूल सकेंगे और स्वादिष्ट बीज भी खा सकेंगे, और ······ ।'

आगे उस नन्हें पौधे ने और क्या-क्या कहा यह मैं न सुन सका । मेरी बच्ची आकर कहने लगी—

'पिता जी, जल्दी चलिये आपका दूध ठण्ढा हो रहा है ।'

'चलो, मैं अभी आया' कह कर मैंने बड़ी सावधानी से उस नन्हें पौधे को चारो तरफ़ की काफ़ी मिट्टी के साथ खोद लिया जिससे उसकी जड़ों को कोई हानि न पहुँचने पाये और बंगले की चहारदीवाली के बाहर एक छोटा सा गड्ढा खोद कर लगा दिया । उसके चारो तरफ़ ईंटों का एक घेरा बना कर काँटे भी रूँध दिये जिससे उसे जानवर चर न जायें और वह धूप तथा रोशनी पाता हुआ आराम से बढ़ता रह सके ।

— ० —

हमारी डाक

सूबेदार
भगवान चरण त्रिपाठी

मामा का बाजार
लश्कर-ग्वालियर
७ मार्च १६८८

आदरणीय अमर जी !

सादर नमस्कार,

अत्र कुशल तत्रास्तु। आपको ३५ ग्राहकों का चन्दा ८७५) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजा है। प्राप्त की सूचना दीजियेगा। शेष ग्राहकों से भी सम्पर्क कर के आपको शीघ्र ही उनका भी शुल्क भेजूँगा। इधर मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ है। डॉक्टर ने चलना-फिरना बिल्कुल बन्द कर दिया है। इस समय श्रीधर दीक्षित जी मुझको इस कार्य में बहुत सहयोग दे रहे हैं। वह नये ग्राहक भी बना रहे हैं। आपने ४० प्रतियां भेजी हैं। २०-२५ और भेज दें। जिन ग्राहकों का शुल्क प्राप्त हो चुका है उनकी नामावली इस प्रकार है —

सर्व श्री

१-	२५	आत्मा राम तिवारी	१८-	३११	प्रेम नारायण तिवारी
२-	२८	आनन्द प्रकाश दीक्षित	१६-	३५५	भगवान चरण त्रिपाठी
३-	२६	आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	२०-	३६१	माता प्रसाद त्रिपाठी
४-	६१	उमेश चन्द्र त्रिपाठी	२१-	४०५	राम नन्दन त्रिपाठी
५-	१०१	के० एल० दीक्षित	२२-	४०६	रजनी कान्त दीक्षित
६-	२२६	डी० के० मिश्र	२३-	४०८	राम शकर बाजपेयी
७-	२४१	दुर्गा प्रसाद पाण्डेय	२४-	४०६	राधे श्याम मिश्र
८-	२५२	देवेन्द्र नाथ दीक्षित	२५-	४१०	राम कृष्ण तिवारी
६-	२५३	देवेश चन्द्र दीक्षित	२६-	४१४	रमेश चन्द्र मिश्र
१०-	२६६	नवल किशोर पाण्डेय	२७-	४१५	राकेश नारायण दीक्षित
११-	२६०	प्रभुदयाल शुक्ल	२८-	४४४	रमेश चन्द्र त्रिपाठी
१२-	२६१	परमानन्द दीक्षित	२६-	४८३	विष्णु दत्त शुक्ल
१३-	२६२	प्रेम नारायण मिश्र	३०-	४८६	मेजर बी० पी० तिवारी
१४-	२६३	पी० एन० बाजपेयी	३१-	५४३	सत्य नारायण दीक्षित
१५-	२६४	प्रभु दयाल मिश्र	३२-	५४४	एस० के० पाण्डेय
१६-	२६६	पुत्तू लाल दुबे	३३-	५४५	डॉ० एस० पी० दुबे
१७-	२६६	प्रेम प्रकाश दीक्षित	३४-	६१२	श्रवण कुमार मिश्र
			३५-	६१३	श्रीकृष्ण दीक्षित

आप जो भी सामग्री आजकल समाज को दे रहे हैं वह सब संग्रहणीय है, समाज उसे विशेष रुचि से ग्रहण कर रहा है। प्रत्येक अंक कुछ-न-कुछ इतिहास दे रहा है— समाज का, सभाओं का, प्रतिष्ठित पुरुषों का। आपकी सूझ-बूझ की लोग भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। आप स्वस्थ तथा निरोग रहें यही परमात्मा से प्रार्थना है।

आपका ही,
भगवान चरण त्रिपाठी

नोट— आप, पं० छन्नूलाल दीक्षित तथा पं० श्रीधर दीक्षित "कान्यकुब्ज" के प्रकाशन में जो सहयोग

दे रहे हैं उसके लिये पत्र आपका सदैव ऋणी रहेगा। ऐसा ही सहयोग मुझे बिलासपुर से पं० गंगाप्रसाद जी वाजपेयी 'नवीन' तथा इटारसी से पं० विष्ण दयाल जी शुक्ल से मिल रहा है। क्या समाज इन सबकी सेवाओं को कभी भुला सकेगा ?

—'अमर'

राधाचरण तिवारी

एम० ए०, एल-एल० बी०, (ऐडवोकेट)

ओंकार भवन, गणेशगञ्ज
खण्डवा-४५०००१

श्रद्धेय अमर जी !

सादर प्रणाम,

'कान्यकुब्ज' मई-दिसम्बर का अंक मिला। अंक बहुत ही सुन्दर छपाई-सफ़ाई के साथ निकला है। पत्र की आर्थिक कठिनाइयां मै समझता हूं। आप किसी भी प्रकार उसे प्रकाशित कर रहे हैं। बिलम्ब से ही सही प्रकाशित होता रहे यही कामना है। मेरे "खण्डवा" शीर्षक लेख में कुछ त्रुटियाँ रह गयी हैं जो सुधार देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। त्रुटियाँ निम्नानुसार हैं—

१. दिल्ली के लिये यहाँ से बोगी केवल मीटर गेज में लगती है। ब्राड गेज में बम्बई से दिल्ली तक सीधी गाड़ियाँ हैं।

२. फोरसेथगंज मोहल्ला पहले फ़ुरसतगंज हुआ और बाद में परदेशीपुरा। फ़ुरसतगंज में अधिकतर वकील रहते थे। फ़ुरसत के समय चौपड़ शतरंज, ताश खेला करते थे। इसी प्रकार अन्य मोहल्ले हैं जैसे घासपुरा (पहले कभी घास बिकती थी), इमली पुरा (पहले इमली के झाड़ थे), ऊंट कुआ (पहले कभी कुयें में ऊँट गिरा था), दूधतालाई (पहले कभी मोहल्ले वाले गाय बैल भैंस बहुतायत से पालते थे), सिंघाड़-तलाई (तलाई में कभी सिंघाड़े बोये जाते थे), विद्यानगर, विद्युतनगर, सुभाषनगर, मच्छी बाज़ार, पत्ती बाज़ार, हरीगंज, रामगंज आदि। सभी मोहल्ले विशेष आधार पर बने हैं।

३. डाकघर गणेश तलाई के नाम से अधिकृत है।

४. पं० माखन लाल जी का अपना कोई मकान नहीं था। दो मञ्जिला भवन जिसमें वे रहते थे किराये का था। उनके निधन पर उसे राष्ट्रीय स्मारक बनाने की चर्चा चली थी जो अब समय के साथ ठण्डी हो चुकी है। वह भवन बस स्टैण्ड से कुछ दूरी पर है। पं० माखन लाल चतुर्वेदी बस स्टैण्ड बनने के पहले वहाँ प्रायमरी पाटशाला थी।

५. 'सिंगाजी ग्राम में प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल पंचमी से मार्गशीर्ष एकादशी तक एक बहुत बड़ा मेला लगता है।'

मेला आश्विन शुक्ल एकादशी से कार्तिक कृष्ण पंचमी तक जनपद सभा हरसूद के व्यवस्थापन में लगता है। प्रारम्भ में यह मेला निजी था, फिर शासकीय हुआ, उपरांत डिस्ट्रिक्ट कौंसिल खंडवा के व्यवस्थापन में दिया गया। डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों को विघटित कर जनपद सभायें बनीं और यह मेला जनपद सभा हरसूद के अन्तर्गत आया। यह विशेष कर पशुओं की बिक्री का मेला है। शासन आय का चौथाई हिस्सा लेती थी जो अब बन्द कर दिया गया है।

नोट— इतिहास में रुचि रखने वाले पाठक कृपया अपने-अपने अंकों में सुधार कर लें।

—अमर

—०—

शुभ विवाह

'कान्यकुब्ज-कुल-कुमुद-कलानिधि' श्रीमान् पण्डित श्रीधर जी मिश्र, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, सीनियर ऐडवोकेट, हाई कोर्ट, लखनऊ की प्रपौत्री आयुष्मती मणि मिश्र (सुपुत्री स्व० पं० शैलेन्द्र मिश्र, ऐडवोकेट) का शुभ पाणि-ग्रहण संस्कार ले.फ्टीनेण्ट कर्नल एच० एन० त्रिपाठी (मूल निवासी (फतेहगढ़, तहसील फर्रुखाबाद), सरोजनीनगर, लखनऊ के सुपुत्र चिरञ्जीव सुशील त्रिपाठी, कैप्टेन भारतीय सेना, के साथ बड़े ही हर्ष एवम् उल्लास के साथ ११ फरवरी सन् १९८८ को सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस विवाह समारोह में वर एवम् वधू के मङ्गलमय भविष्य की कामना करने के लिये उभय पक्ष के अनेक गण्य-मान्य व्यक्ति सपरिवार उपस्थित हुए जिनकी संख्या लगभग एक हजार तक थी। कन्यापक्ष की ओर से बारात का स्वागत करने के लिये उपस्थित महानुभावों में प्रमुख थे सर्वश्री वीरेन्द्र नाथ मिश्र (प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी के सुरक्षा पाइलट), आर० डी० शुक्ल (कमाण्डेण्ट पी० ए० सी०), यतीन्द्र नाथ शुक्ल, डा० राजेन्द्र नाथ मिश्र (आँख, नाक, कान के रोगों के विशेषज्ञ, अवकाशप्राप्त प्रोफेसर मेडिकल कालेज, लखनऊ), डॉ० रवीन्द्र नाथ मिश्र (अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर मेडिसिन, मेडिकल कालेज, लखनऊ), कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ० नरेश चन्द्र मिश्र (प्रोफ़ेसर आफ़ सर्जरी, लखनऊ मेडिकल कालेज, डॉ० रामचन्द्र शुक्ल (अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर ऑफ़ फिज़ियालोजी, मेडिकल कालेज लखनऊ), डॉ० शिवदत्त मिश्र 'निशीथ' (प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष फ़िज़ियालोजी डिपार्टमेण्ट, लखनऊ मेडिकल कालेज), द्वारकानाथ झा (अवकाशप्राप्त मुख्य न्यायाधीश), वर्तमान न्यायाधीश श्री ब्रजेश कुमार, गुरुशरण लाल (अवकाशप्राप्त न्यायाधीश), ऑर० एन० त्रिवेदी (ऐडिशनल ऐडवोकेट जेनरल), श्री पुष्कर नाथ भट्ट (वर्तमान अध्यक्ष अवध बार ऐसोसियेशन), बी० के० सिंह वर्तमान मन्त्री अवध बार ऐसोसियेशन आदि।

विवाह-स्थल विद्युद्दीपों से बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढङ्ग से सजाया गया था; आगन्तुकों के स्वागत-सत्कार में किसी भी प्रकार की कमी का अनुभव नहीं होने दिया गया। जयमाल के उपरान्त प्रीतिभोज हुआ जिसका प्रबन्ध बहुत ही सुन्दर था।

विवाहोपलक्ष में कन्या के पितामह श्रीमान् पं० श्रीधर जी मिश्र ने 'कान्यकुब्ज' पत्र को ५०१) की धनराशि भेंट-स्वरूप अर्पित की। सम्बन्ध मङ्गलमय तथा कल्याणकारी हो।

शुभ विवाह
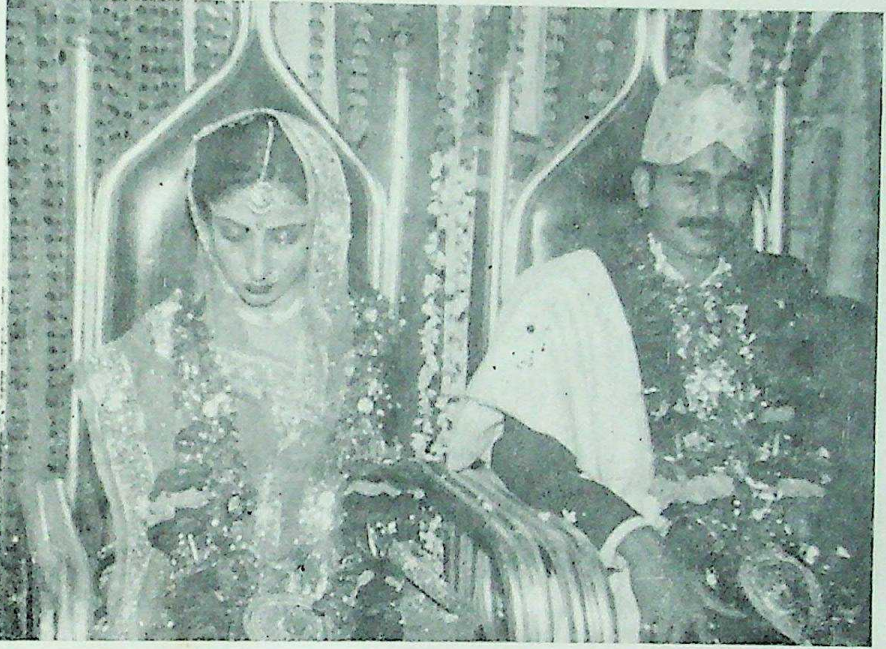
आयुष्मती मणि त्रिपाठी तथा चिरञ्जीव कैप्टेन सुशील त्रिपाठी
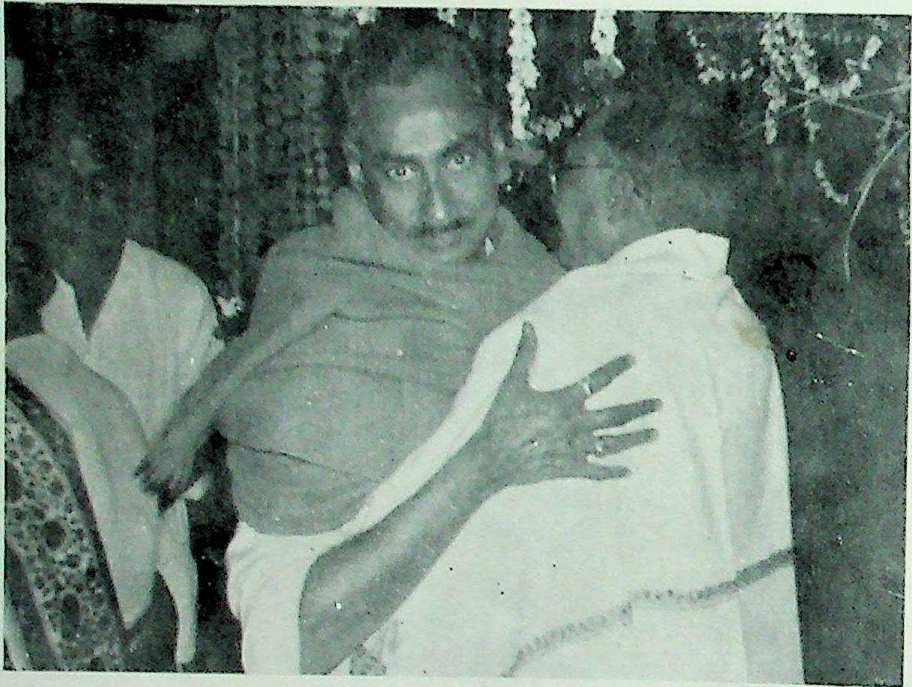
श्रीमान् पं० जितेन्द्र मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट
तथा श्रीमान् ले.फटीनेण्ट-कर्नल हरि नन्दन त्रिपाठी

(दोनों समधी परस्पर भेंट करते हुए)

शुभ विवाह

"कान्यकुब्ज" पत्र के परम हितैषी ग्वालियर निवासी श्रीमान् पं० भगवान चरण जी त्रिपाठी की पौत्री तथा श्रीमान् डा० रामगोपाल त्रिपाठी की सुपुत्री सौभाग्याकांक्षिणी अनामिका का शुभ पाणिग्रहण संस्कार लश्कर निवासी श्रीमान् पं० रमेश कुमार मिश्र के सुपुत्र चि० अवधेश मिश्र के साथ २३ जनवरी सन् १९८८ को बड़े ही स्नेहपूर्ण वातावरण में हर्ष एवम् उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर नगर के प्रतिष्ठित बन्धुओं तथा गण्य-मान्य सज्जनों ने उपस्थित होकर नवदम्पति को आशीर्वाद दिया। हम भी नव-दम्पति के सुखमय दाम्पत्य जीवन की मङ्गल कामना करते हैं।

— ० —

शुभ विवाह

श्रीमान् डॉ० राधामोहन मिश्र, पी० ई० एस०, प्रिंसिपल राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद के सुपुत्र चि० हिमांशु मोहन मिश्र का शुभ विवाह श्रीमान् पं० ज्ञानदत्त जी पांडेय की सुपुत्री आयुष्मती वन्दना के साथ ७ फ़रवरी सन् १९८८ को सानन्द सम्पन्न हुआ।

हम नव-दम्पति के सुख एवम् समृद्धिपूर्ण वैवाहिक जीवन की मङ्गल कामना करते हैं।

— • —

शुभ विवाह

श्रीमान् पं० आदित्य नारायण शुक्ल की पुत्री सौभाग्याकांक्षिणी मिथिलेश का शुभ पाणिग्रहण संस्कार इटावा-निवासी श्री एम० पी० शुक्ल के सुपुत्र चिरञ्जीव प्रमोद शुक्ल के साथ २० फ़रवरी सन् १९८८ को सानन्द सम्पन्न हो गया। इस मांगलिक अवसर पर कन्यापक्ष की ओर से 'कान्यकुब्ज' पत्र को ५१) की भेंट दी गयी। नवदम्पत्ति का वैवाहिक जीवन सुख एवम् समृद्धि से परिपूर्ण हो।

इतिहास विशेषांक

का

द्वितीय भाग

प्रथम भाग की ही भाँति सज-धज के साथ छप रहा है। इसके कुछ प्रमुख लेख—

१. इतिहास और वंशावली
२. गोत्र, प्रवर तथा आस्पद
३. औदीच्य विप्र वर्ग
४. कूर्माञ्चलीय ब्राह्मण समाज
५. मथुरा के चतुर्वेदी
६. सरयूपारीण ब्राह्मण समाज
७. दक्षिण भारत के कान्यकुब्ज
८. यज्ञों की परिकल्पना और प्राचीन भारतीय विज्ञान
९. उपमन्यु गोत्र : इतिहास व वंशावली
१०. ऋषि-प्रणीत वैवाहिक नियम और सन्तति-निर्माण
११. भूमेश्वर ब्राह्मण

३०) भेज कर अपना अंक सुरक्षित करा लें। सम्भव है बाद में प्रथम भाग की ही तरह यह भी किसी भी मूल्य में प्राप्त न हो सके। अङ्क रजिस्टर्ड डाक से ही भेजा जायगा।

— ० —

विवाह विज्ञापन

एक सुसम्पन्न भरद्वाज गोत्रीय खोर के पाण्डेय परिवार के एक २७ वर्षीय, ६ फुट लम्बे, स्वस्थ, सुन्दर, अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त, टेलेक्स तथा टेलीफ़ोन में डबल डिप्लोमा होल्डर वर के लिये एक प्रतिष्ठित परिवार की शिक्षित कन्या की आवश्यकता है। परिवार का अपना निजी मकान तथा जायदाद है। दहेज का कोई प्रश्न नहीं। पत्र-व्यवहार कन्या के चित्र तथा जन्म-पत्र के साथ करें।

—कान्ती देवी पाण्डेय
D, 43-5-16, रेलवे न्यू कालोनी,
Akkayya Palam, P.O. Waltair,
R.S. Vishakhapatnam-530016, A.P.

'कान्यकुब्ज - कुल - कमल - दिवाकर'

श्रीमान् पं० देवीरत्न वाजपेयी, बी० ए०, एल-एल० बी०

ऐडवोकेट इनकम टैक्स व सेलस टैक्स, कानपुर

गुणाः कुर्वन्ति दूतत्वं दूरेऽपि वसतां सताम् । केतकी गन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदाः ॥

सत्पुरुषों के गुण उनके दूतों का कार्य करते हैं। वह कितनी ही दूर क्यों न बसते हों उनका सुयश-सुरभि चारों ओर फैल कर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। केतकी के कुसुम कहीं भी क्यों न विकसित हो रहे हों उनकी मनोहारिणी सुगन्ध मधुकरों को आकर्षित कर ही लेती है। फलतः अलि वृन्द अनायास ही उनकी ओर खिचे चले आते हैं।

हमारे चरितनायक श्रीमान् पं० देवीरत्न वाजपेयी, बी० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट—जिन्हें लोग स्नेहवश डी० आर० वाजपेयी ही कहते हैं—एक ऐसे ही परहित-रत महानुभाव हैं जिनके परिवार की तुलना किन्हीं विशिष्ट सद्गुणों के कारण केतकी के सुमनों के उपवन से की जा सकती है। वाजपेयी जी का शुभ जन्म एक प्रतिष्ठित उपमन्यु-गोत्रीय काशीराम के वाजपेयी परिवार में कातिक कृष्ण ५, संवत् १६७६ वि० अर्थात् २ नवम्बर सन् १६१६ ई० को पं० रामाधार वाजपेयी की धर्मपरायणा गृहणी श्रीमती रामदेवी जी के गर्भ से हुआ। आप अपने बाल्यकाल से ही बड़े होनहार तथा कुशाग्रबुद्धि थे। दस वर्ष की अल्प आयु में ही अपने पूज्य पिता और माता की स्नेह-छाया से दूर कानपुर में अपने बड़े भाई के पास रह कर आप अध्ययन करने लगे। अति विषम परिस्थितियों में अभावों से लड़ते हुए समय व्यतीत होता रहा। पन्द्रह वर्ष की आयु से ही वह ट्यूशन करने लगे। अट्ठारह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते माता तथा पिता दोनों से विधाता द्वारा वञ्चित कर दिये गये। कठिनाइयों पर कठिनाइयाँ आती रहीं परन्तु साहस और दृढ़ता से सभी का सामना किया।

श्री वाजपेयी जी अभी बी० ए० के द्वितीय वर्ष के ही छात्र थे कि उन्हें विवाह के बन्धन में बँध जाना पड़ा और विवाह के डेढ़ वर्ष भी नहीं बीत पाये थे कि आपको शिक्षा तथा घर दोनों ही किन्हीं अपरिहार्य कारणों से छोड़ने पड़ गये। यहीं से जीवन की कठोरतम परीक्षा—आजीविका की खोज—आरम्भ हुई। कभी आपने हार्नेस फ़ैक्ट्री में काम किया, कभी सी० ओ० डी० और कभी आई० जी० एस० में, कभी प्रेस में काम किया, कभी ट्रक चलवाया और कभी ईंटों के भट्ठे में साझेदारी की। जो व्यक्ति परिश्रमी और ईमानदार होता है वह स्वाभिमानी और खरे स्वभाव का भी होता है। यही कारण था कि दाँव-पेंचों के वातावरण में आपका दम घुटता रहा और आप एक के बाद एक जगह से हटते रहे। इसी बीच आपने पढ़ना फिर आरम्भ कर दिया और डी० ए० वी० कॉलेज, कानपुर से एल-एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इसके बाद संघर्ष का एक नया दौर चला और वाजपेयी जी ने पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए इनकम टैक्स तथा सेलस टैक्स की प्रैक्टिस आरम्भ की। अपनी प्रतिभा, परिश्रम एवं सद्व्यवहार के कारण कानपुर नगर के प्रमुख वकीलों में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लेने में आपको अधिक समय नहीं लगा। आपने उत्तर प्रदेश सेलस टैक्स बार ऐसोसियेशन की स्थापना की जिसके आप संस्थापक अध्यक्ष (फ़ाउण्डर प्रेसीडेण्ट) चुने गये। स्वल्प आहार, स्वल्प निद्रा और अठारह-बीस घण्टे तक काम करने की लगन ने आपका मार्ग प्रशस्त किया और लक्ष्मी की आप पर कृपा होने लगी। धीरे-धीरे आपने कानपुर के शान्तिनगर मोहल्ले (कैण्ट एरिया) में अपना सुरम्य दोमञ्जिला भवन बनवाया।

उदार हृदय तथा परहित-चिन्तक होने के कारण आपने अपने उपार्जित धन का उपयोग अपने परिवार तक ही सीमित नहीं रक्खा वरन् जनहित में भी लगाया। अपने जन्मस्थल दुबेपुर में अपने पैतृक गृह को नये सिरे से निर्मित करा कर आपने आतंजनों की सेवा के लिये उसमें श्री राम चिकित्सालय की स्थापना की तथा ग्राम के एक छोटे से कमरे में आरम्भ किये गये स्कूल को महर्षि दयानन्द इण्टर कॉलेज का रूप दिया जिसकी अब काफ़ी बड़ी इमारत है। इस इमारत के बनवाने में तथा विद्यालय की सर्वतोमुखी उन्नति में आपका तन से भी सहयोग रहा है, मन से भी सहयोग रहा है और धन से भी सहयोग रहा है। इस विद्यालय के आप अनेक वर्षों से प्रेसीडेण्ट हैं।

श्रीमान् वाजपेयी जी का शुभ विवाह ग्राम कुराई (जनपद फ़तेहपुर) निवासी श्रीमान् पं० राम नारायण जी पाण्डेय की पौत्री तथा श्रीमान् पं० राम भरोसे जी पाण्डेय की सुपुत्री श्रीमती सावित्री देवी के साथ हुआ जिनसे आपके तीन पुत्र तथा दो कन्याय हैं। कन्याओं में ज्येष्ठ हैं श्रीमती मञ्जु तिवारी जिनका पाणि-ग्रहण सूत व्यवसायी श्री पं० रामकृष्ण तिवारी के ज्येष्ठ पुत्र पं० हरिकृष्ण तिवारी, एम० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट कानपुर, के साथ हुआ जिनके दो पुत्र तथा एक कन्या है। कन्या सौ० नीरजा का शुभ विवाह दिल्ली के मौसम विभाग के डाइरेक्टर श्रीमान् पं० धनञ्जय मिश्र के द्वितीय सुपुत्र चि० शशाङ्क मिश्र के साथ हुआ जो सम्प्रति अमेरिका में बिज़िनेस मैनेजमेण्ट का अध्ययन कर रहे हैं। इन मिश्र दम्पति के एक शिशु है आयुष्मान् समीर। पं० हरिकृष्ण तिवारी के पुत्रों में ज्येष्ठ चि० राजेश तिवारी, एम. ए. के तथा कनिष्ठ चि० ऋतेश तिवारी सातवीं कक्षा के छात्र हैं।

श्रीमान् वाजपेयी जी की द्वितीय पुत्री हैं श्रीमती मधु तिवारी, एम. ए. जिनका शुभ विवाह इटावा-निवासी प्रतिष्ठित ऐडवोकेट श्रीमान् पं० विद्याधर जी तिवारी के द्वितीय सुपुत्र श्रीमान् पं० ओम प्रकाश जी तिवारी के साथ हुआ जो इस समय दिल्ली में डी. सी. एम. टोयोटा में ऐसिस्टेण्ट जेनरल मैनेजर (प्रोडक्शन) के पद पर कार्यरत हैं। इनके दो पुत्र हैं—ज्येष्ठ चि० प्रशान्त तिवारी जो ग्यारहवीं कक्षा के तथा कनिष्ठ चि० राहुल तिवारी जो छठी कक्षा के छात्र हैं।

श्रीमान् पं० देवीरत्न जी वाजपेयी के पुत्रों में ज्येष्ठ हैं श्रीमान् पं० आदित्य कुमार जी वाजपेयी जिनका शुभ जन्म २६ मार्च सन् १९५२ को कानपुर में हुआ। इन्होंने सन् १९७१ में डी. ए. वी. कॉलेज कानपुर से एम. कॉम. तथा सन् १९७२ में एल-एल. बी. किया। इसके बाद आपने अपने पूज्य पिता की देख-रेख में ही इनकम टैक्स की प्रैक्टिस आरम्भ की और अपनी प्रतिभा तथा कुशाग्र बुद्धि के बल पर अल्प समय में ही ऐडवोकेटों में अपना एक सम्माननीय स्थान बना कर यह सिद्ध कर दिया कि वह एक योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। इनका शुभ विवाह रायबरेली-निवासी श्रीमान् पं० कृष्ण चन्द्र अग्निहोत्री की कनिष्ठ कन्या सौ० श्रीमती ऊषा रानी, एम. ए. के साथ हुआ जिनसे इनके दो पुत्र हैं—चि० अमित वाजपेयी तथा चि० अपूर्व वाजपेयी जो क्रमशः सातवीं तथा द्वितीय कक्षा के छात्र हैं।

श्रीमान् पं० देवीरत्न वाजपेयी के द्वितीय सुपुत्र श्रीमान् पं० दिनेश कुमार वाजपेयी, बी. ए., एल-एल. बी., ऐडवोकेट अपने बड़े भाई श्री आदित्य कुमार जी के ही साथ कानपुर में सेल्स टैक्स (बिक्री कर) की प्रैक्टिस कर रहे हैं। इनका शुभ विवाह डॉ० राज कुमार शुक्ल (अब स्वर्गीय) की कनिष्ठ सुपुत्री सौ० उषा कुमारी, एम. एस-सी. (प्राणिशास्त्र), बी. एड. के साथ हुआ जिनसे आपके तीन कन्यायें हैं—आयुष्मती शिल्पी, जो चतुर्थ कक्षा की छात्रा है, आयुष्मती पल्लवी जो प्रथम कक्षा की छात्रा है तथा आयुष्मती देविका जिसने किण्डरगार्टेन में प्रवेश लिया है।

पं० देवीरत्न जी वाजपेयी के तृतीय सुपुत्र हैं पं० प्रभात कुमार वाजपेयी, बी. ए., एल-एल. बी. जो अपनी रबर फ़ैक्ट्री का संचालन कर रहे हैं। इनका शुभ विवाह पं० जगदम्बा प्रसाद जी पाण्डेय, एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर की तृतीय सुपुत्री श्रीमती अनुपम, बी० ए० के साथ हुआ है। इनके एक बालक है चि० आशीष वाजपेयी। प्रभात कुमार जी अपने कॉलेज जीवन में एक अच्छे बॉक्सर रहे हैं।

वाजपेयी जी का संयुक्त परिवार है। परिवार के सभी सदस्यों के बीच जो पारस्परिक स्नेह और सद्भावना, बड़ों के प्रति आदर और सम्मान, तथा छोटों के प्रति स्नेह और दुलार है वह बहुत कम परिवारों में देखने को मिलता है। अपनी जीवन-सङ्गिनी श्रीमती सावित्री देवी का वाजपेयी जी बहुत ही आदर करते हैं, कहते हैं कि "आज मैं जो कुछ हूँ उसका अधिकाश श्रेय मेरी धर्मपत्नी जी को ही है। मेरे सारे कर्त्तव्य अपूर्ण ही रह जाते यदि यह मन प्राण से मुझे सहयोग न देतीं। यदि ईमानदारी से देखा जाय तो मेरी शक्ति तथा प्रेरणा का यही स्रोत रही हैं। बहुत कष्ट उठाया है इन्होंने मेरे साथ।"

श्री वाजपेयी जी के पूर्वज मूल रूप से सिकन्दरपुर (जिला उन्नाव) के रहने वाले थे। सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में नाना साहब पेशवा का साथ देने के कारण यह परिवार तत्कालीन ब्रिटिश शासन का कोपभाजन बना। फलतः इन्हें अपना गृह त्याग कर कुछ दूर स्थित ग्राम दुबेपुर (तहसील बीघापुर, जिला उन्नाव) में जाकर बसना पड़ा। श्री देवीरत्न वाजपेयी के पितामह पं० राम प्रसाद वाजपेयी बड़े ही उदार तथा धर्मपरायण व्यक्ति थे। इनके सुपुत्र अर्थात् हमारे चरितनायक के पूज्य पिता पं० राम आधार वाजपेयी बड़े ही स्वाभिमानी तथा परहित-चिन्तक व्यक्ति थे। परिस्थितिवश आपको पुलिस विभाग में कार्यरत होना पड़ा। एक घटना को लेकर आपका अपने अंग्रेज अफ़सर से वैचारिक मतभेद हो गया, स्वाभिमान ने ठोकर दी और आपने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया तथा जाकर अपने गृह-ग्राम दुबेपुर में रहने लगे।

पं० राम आधार जी के दो विवाह हुए। प्रथम पत्नी से दो पुत्र हुए—ज्येष्ठ पं० रामदुलारे वाजपेयी तथा कनिष्ठ पं० राम चरण वाजपेयी। पं० राम दुलारे वाजपेयी कानपुर में पोस्ट मास्टर के पद पर कार्यरत रहे। २६ दिसम्बर सन १९६४ को ८६ वर्ष की आयु में उनका निर्वाण हुआ। इनके दो पुत्र हुए—पं० गंगा प्रसाद वाजपेयी (अब स्वर्गीय) तथा पं० विजय शंकर वाजपेयी जो अवकाश-प्राप्त पोस्ट मास्टर हैं। कनिष्ठ श्री रामचरण वाजपेयी ने ससम्मान स्नातक की उपाधि प्राप्त की परन्तु दुर्भाग्यवश २३ वर्ष की अल्पायु में ही उनका निधन हो गया।

पं० राम आधार जी की द्वितीय पत्नी श्रीमती रामदेवी जी से सात सन्तानें हुईं—दो पुत्र तथा पाँच कन्यायें। पुत्रों में ज्येष्ठ हैं हमारे चरितनायक पं० देवीरत्न वाजपेयी तथा कनिष्ठ पं० हर प्रसाद वाजपेयी। पं० हर प्रसाद वाजपेयी का कानपुर में अपना स्वयम् का व्यवसाय है। इनके दो पुत्र चि० अनिल वाजपेयी तथा चि० सञ्जय वाजपेयी तथा दो पुत्रियाँ हैं।

हमारे चरितनायक पं० देवीरत्न जी वाजपेयी की विशेषता है उनका अतिथि-सत्कार। अतिथियों का जो सम्मान आपके यहाँ होता है वह अन्यत्र बहुत कम देखा जाता है। कुछ कहने पर आप मुस्करा कर कह देते हैं कि "हमारे ऋषियों की मान्यता रही है 'अतिथि देवो भव' की।" स्वभाव भी आपका बड़ा ही विनोदी तथा परिहास-प्रिय है। कितना ही भारी मन लिये हुए कोई आपके पास क्यों न पहुँचे जब उठेगा तो हँसता हुआ ही, अपना सारा दुःख-दर्द भूल कर। जीवन की कठिनतम परिस्थितियों से होकर गुजरने के कारण आप सबका दुःख-दर्द समझते हैं और हर तरह से उसे दूर करने का प्रयत्न करते हैं। ☐☐

'कान्यकुब्ज-कुल-कमल-दिवाकर'

श्रीमान् पं० प्रदीप कुमार जी द्विवेदी, बी० टेक० (ऑनर्स)

डेपुटी जेनरल मैनेजर, राष्ट्रीय ताप विद्युत् निगम, नयी दिल्ली

सर्वत्र गुणवान् देशे चकास्ति प्रथतेतराम्।
मणिर्मूर्ध्नि गले बाहौ पादपीठेऽपि शोभते ॥

गुण से युक्त—अर्थात् धागे में पिरोई हुई—मणि सभी अङ्गों की शोभा बढ़ाती है। वह अङ्ग चाहे पैर हों, चाहे कटि अथवा वक्ष हो, चाहे भुजायें हों, चाहे कण्ठ हो और चाहे शीश हो जहाँ वह चूड़ामणि बन कर बालों की शोभा बढ़ाती है। ऐसा ही इतिहास होता है एक गुणवान् व्यक्ति का जिसमें ऐसी सामर्थ्य होती है कि वह एक के बाद एक पद की गरिमा में वृद्धि करता हुआ शनैः शनैः शीर्ष स्थान पर जा पहुँचता है। फिर यदि ऐसा व्यक्ति कुल और शील में भी श्रेष्ठ हुआ तो सोने में सुगन्ध जैसी आ जाती है।

हमारे चरितनायक 'कान्यकुब्ज-कुल-कमल-दिवाकर' श्रीमान् पण्डित प्रदीप कुमार जी द्विवेदी का शुभ जन्म एक अत्यन्त प्रतिष्ठित कात्यायन गोत्रीय पत्योंजा के द्विवेदी परिवार में २४ अक्टूबर सन् १९४२ को लखनऊ में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा लखनऊ में ही हुई। क्वीन्स ऐंग्लो संस्कृत कॉलेज लखनऊ से सन् १९५७ में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त आपने लखनऊ क्रिश्चियन कालेज में प्रवेश लिया और सन् १९५९ में इण्टरमीडियेट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। लखनऊ विश्वविद्यालय से बी० एस-सी० प्रथम वर्ष करते-करते आपको आई० आई० टी० खड़गपुर में प्रवेश प्राप्त हो गया। वहाँ से सन् १९६४ में बैचलर ऑफ़ टेक्नॉलोजी (ऑनर्स) इलेक्ट्रिकल इञ्जीनियरिङ्ग में कर के आपने मार्च १९६५ में राजस्थान राज्य विद्युत् मण्डल से अपना सेवा-काल आरम्भ किया। वहाँ आपने गैस टरबाइन स्थापित करने, उसके प्रचालन में तथा विद्युत् प्रणाली में विश्लेषण एवं अभिकल्प (डिजाइनिङ्ग) में अपनी योग्यता प्रदर्शित करते हुए अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

सन् १९७१ में द्विवेदी जी व्यास कॉन्स्ट्रक्शन बोर्ड, चण्डीगढ़ में भारत के प्रथम ४०० के० वी० प्रॉजेक्ट की अभिकल्पना (डिजाइनिङ्ग) के लिये नियुक्त किये गये। आपने देहुर से पानीपत तक की विद्युत् प्रणाली का अभिकल्प पूरा किया और इसी बीच तीन महीने के लिये आप इटली भेजे गये। सन् १९७५ में आप एक्जीक्यूटिव इञ्जीनियर के पद पर आसीन हुए और सन् १९७८ में आपने राष्ट्रीय ताप विद्युत् निगम (एन० टी० पी० सी०) नयी दिल्ली में ऐसिस्टेण्ट चीफ़ डिजाइन इञ्जीनियर के पद का भार सम्हाला। अपनी प्रतिभा तथा सूझ-बूझ के बल पर उन्नति करते हुए आप सन् १९८६ में डेपुटी जेनरल मैनेजर के पद पर पहुँचे और तब से इसी पद पर कार्य कर रहे हैं। अपने इस सेवा-काल में आपको कई बार इंगलैण्ड, फ़्रान्स, इटली, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम, स्वीडेन, डेनमार्क, सोवियत रूस तथा कैनाडा आदि विदेशों की यात्रा करनी पड़ी है। श्री द्विवेदी जी अति वृहत् ताप बिजली गृहों से विद्युत् ऊर्जा को विभिन्न प्रदेशों के उपभोक्ता केन्द्रों तक पहुँचाने के कार्य के विशेषज्ञ माने जाते हैं।

अपने विद्यार्थी जीवन में श्री द्विवेदी जी क्रिकेट के एक अच्छे खिलाड़ी थे जिन्होंने विश्वविद्यालय का भी प्रतिनिधित्व किया और अपने जनपद का भी। अपने समय में आपने कई कीर्तिमान भी स्थापित किये। प्रदेश स्तर पर जब प्रतिनिधित्व करने की बात उठी तो आपने उसे अपनी पढ़ाई में बाधक पा कर जाना स्वीकार नहीं किया।

श्रीमान् द्विवेदी जी का शुभ विवाह श्रीमान् पं० श्रीकृष्ण शुक्ल, एम. एस-सी., तत्कालीन उप-निदेशक उद्यान (हार्टीकल्चर), उत्तर प्रदेश, की सुपुत्री श्रीमती वीणा, एम. ए. के साथ मई सन् १९६७ में सम्पन्न हुआ जिनसे आपके दो सन्तानें हैं। ज्येष्ठ है कन्या – कुमारी सुप्रिया द्विवेदी जिसका जन्म जून १९६८ में हुआ। सुप्रिया ने १९८९ में दिल्ली विश्वविद्यालय से बी. ए. (ऑनर्स) की परीक्षा उत्तीर्ण की और अब एम. ए. की छात्रा है। कनिष्ठ है पुत्र — चिरञ्जीव मनीष द्विवेदी जो रुड़की विश्वविद्यालय में आर्कीटेक्चर के द्वितीय वर्ष का छात्र है।

श्री प्रदीप कुमार जी के पितामह के भी पितामह परम ब्रह्मण्य, धर्म-कर्म-परायण, बिद्वद्वर पं० प्रसादी लाल जी द्विवेदी को उनके मूल निवास-स्थान काकूपुर (जनपद कानपुर) से सादर आमन्त्रित कर राजा साहब जगम्मनपुर ने अपने राज्य में बसाया तथा उन्हें जमीन, जायदाद और रहने के लिये सुन्दर निवास-स्थान प्रदान किया। श्री प्रदीप कुमार जी के पूज्य प्रपितामह पं० देवीदयाल जी द्विवेदी तथा पूज्य पितामह पं० पतिराखन लाल जी द्विवेदी भी बड़े ही धर्मनिष्ठ एवम् सत्कर्मपरायण विद्वान् व्यक्ति थे। आपके पूज्य पिता पं० परमात्मा शरण जी द्विवेदी, एम० ए०, एल-एल० बी०, इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेन्च में प्रैक्टिस करते थे। उनकी गणना न-केवल लखनऊ वरन् उत्तर प्रदेश के दीवानी के प्रमुख ऐडवोकेटों में अभी कल तक की जाती थी। साथ ही वह अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा के सन् १९७६ से २४ फ़रवरी सन् १९८८ अर्थात् अपने जीवन के अन्त समय तक सभापति रहे।

पं० परमात्मा शरण जी का विवाह कालपी-निवासी श्रीमान् पं० रामदत्त जी चतुर्वेदी की सुपुत्री श्रीमती सुशीला देवी जी के साथ हुआ जिनसे तीन सुपुत्र—श्रीमान् पं० प्रमोद कुमार जी द्विवेदी, बी० ए०, एल-एल० एम०, रीडर, विधि संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय; हमारे चरितनायक श्रीमान् पं० प्रदीप कुमार जी द्विवेदी, बी० टेक० (ऑनर्स), डेपुटी जेनरल मैनेजर, राष्ट्रीय ताप विद्युत् निगम, नयी दिल्ली; तथा श्री आलोक कुमार द्विवेदी, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट (अब स्वर्गीय)—एवम् चार कन्यायें हुईं। कन्याओं में ज्येष्ठ श्रीमती प्रेमलता चतुर्वेदी, एम० ए० (दर्शनशास्त्र) का विवाह डॉ० रामपाल चतुर्वेदी, एम० बी०, एम० एस०, अवकाश-प्राप्त प्रिंसिपल, जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, अजमेर के साथ हुआ। यह अब जयपुर में निवास करती हैं। द्वितीय सुपुत्री श्रीमती सुमनलता पाण्डेय, एम० ए० (राजनीति) का विवाह डॉ० राधेश्याम पाण्डेय, एम० बी०, बी० एस०, एम० डी०, अवकाश-प्राप्त प्रोफ़ेसर ऑफ़ मेडिसिन, मेडिकल कॉलेज बड़ोदा के साथ हुआ। तृतीय कन्या श्रीमती रश्मि दीक्षित, एम० ए० (अंग्रेजी साहित्य) का विवाह श्रीमान् पं० सन्तोष कुमार दीक्षित, बी० ई०, एम० एस० (मिसीसिपी विश्वविद्यालय) के साथ सम्पन्न हुआ जो इस समय न्यू जर्सी (अमेरिका) में मिकैनिकल इन्जीनियर हैं; तथा चतुर्थ कन्या श्रीमती उपमा पाण्डेय, एम० ए० (मनोविज्ञान) का विवाह श्रीमान् पं० मोहित कुमार पाण्डेय, बी० ई० के साथ हुआ जो टाटा इलेक्ट्रिक्स बम्बई में वर्क्स मैनेजर हैं।

पं० प्रदीप कुमार जी द्विवेदी अपने पूज्य पिता जी की ही भाँति सरल हृदय, विनम्र स्वभाव तथा सौम्य प्रकृति के व्यक्ति हैं और वैसी ही धर्मपरायणा हैं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती वीणा द्विवेदी।

—:o:—

सद्गुणशीलता कुलीनता का किरीट है। —मोलियर

× × × × ×

यदि एक व्यक्ति उदारमना है तो यह उसकी सबसे बड़ी कुलीनता है। —प्लेटो

—:o:—

'कान्यकुब्ज' के परम हितैषी

श्रीमान् पं० कौशल किशोर त्रिवेदी, एम० एस-सी०

प्रबन्धक, यूनियन बैङ्क ऑफ़ इण्डिया, अमीनाबाद, लखनऊ

वन्द्यः स पुंसां त्रिदशाभिनन्द्यः कारुण्यपुण्योपचयक्रियाभिः।
संसारसारत्वमुपैति यस्य परोपकाराभरणम् शरीरम् ॥

जिस व्यक्ति ने परोपकार को ही अपने शरीर का आभूषण बना रक्खा है उसने मानो संसार के सार-तत्व को न-केवल पहचान ही लिया है वरन् प्राप्त भी कर लिया है। लोगों की कठिनाइयाँ, उनकी विपत्तियाँ उसके हृदय में करुणा का उद्रेक कर उसे यथाशक्ति उनकी सहायता करने के मार्ग ढूंढने पर बाध्य कर देती हैं, और इस प्रकार वह जो पुण्य अर्जित करता है वह उसे तीनों लोकों में देवताओं द्वारा भी वन्दना किये जाने योग्य बना देता है। सरल हृदय, मन्दहास्य से स्मित आनन एवं विनम्र वाणी हमारे चरितनायक श्रीमान् पं० कौशल किशोर जी त्रिवेदी की अक्षय सम्पत्ति है जो उन्हें अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों के आदर और सम्मान का अनायास ही पात्र बना देती है।

श्रीमान् त्रिवेदी जी का शुभ जन्म ब्रह्मावली (जनपद सीतापुर) में २६ दिसम्बर सन् १९४८ को उपमन्यु गोत्रीय रघुनाथ के त्रिवेदी परिवार में हुआ। आपके पितामह श्रीयुत पं० ठाकुर प्रसाद जी त्रिवेदी सीतापुर जनपद के एक जाने-माने जमींदार थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन काल में अनेक अन्य जमींदारों की सहायता करके उनकी जमींदारियाँ कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स में जाने से बचाईं। इनके दो पुत्र हुए—ज्येष्ठ श्री कृष्ण दत्त जी त्रिवेदी जो सीतापुर जनपद के एक प्रतिष्ठित कवि थे तथा कनिष्ठ—हमारे चरितनायक के पूज्य पिता श्रीमान् पं० भैरव दत्त जी त्रिवेदी (अब स्वर्गीय) जो ब्रह्मावली में एक प्रतिष्ठित जमींदार थे। इनका विवाह सिंगहा (जनपद शाहजहाँपुर) के एक पर्याप्त प्रसिद्ध दीक्षित परिवार में श्रीमान् पं० रामेश्वर दयाल जी की सुपुत्री श्रीमती दुर्गा त्रिवेदी के साथ हुआ जिनसे उनके दो पुत्र तथा एक कन्या हुई। कन्या श्रीमती महेश्वरी देवी का शुभ पाणिग्रहण कानपुर के प्रतिष्ठित व्यवसायी श्रीमान् पं० कृष्ण कुमार जी दीक्षित के साथ हुआ। पुत्रों में ज्येष्ठ श्रीमान् पं० भारती रमण जी त्रिवेदी ने राजनीतिक अभिरुचि होने के कारण लखनऊ विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त अपनी जन्मस्थली ब्रह्मावली को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और अपने लोकहितकारी स्वभाव के कारण सभी के स्नेहभाजन बन गये। पिछले कई वर्षों से आप वहाँ के ग्राम-प्रमुख के पद पर आसीन हैं।

पं० भैरवदत्त जी त्रिवेदी के द्वितीय सुपुत्र हमारे चरितनायक श्री कौशल किशोर जी त्रिवेदी ने चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय से सन् १९७० में कृषि विषय लेकर प्रथम श्रेणी में एम. एस-सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की सन् १९७२ में आप एक राष्ट्रीयकृत बैङ्क में कृषि अधिकारी के रूप में चयनित हुए। धीरे-धीरे विभिन्न पदों पर उन्नति करते हुए इस समय आप यूनियन बैङ्क की अमीनाबाद लखनऊ शाखा में प्रबन्धक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

श्रीमान् त्रिवेदी जी का शुभ विवाह पं० मुंशी लाल जी शुक्ल (अब स्वर्गीय) की सुपुत्री श्रीमती विमला त्रिवेदी एम. ए. (कानपुर विश्वविद्यालय) के साथ सन १९६८ में सम्पन्न हुआ। श्री शुक्ल जी बम्हनाखेड़ा (जनपद हरदोई) के निवासी तथा एक जाने-माने ट्रान्स्पोर्टर थे। त्रिवेदी दम्पति के चार पुत्र-रत्न हैं—ज्येष्ठतम चि० शशाङ्क त्रिवेदी जिन्होंने प्रथम श्रेणी में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की और अब गणित तथा विज्ञान विषयों को लेकर इण्टरमीडियेट में पढ़ रहे हैं। द्वितीय पुत्र चि० निशांक त्रिवेदी कक्षा ८ के छात्र हैं, तृतीय पुत्र चि० आशुतोष त्रिवेदी कक्षा ५ तथा चतुर्थ चि० निखिल त्रिवेदी कक्षा ३ के छात्र हैं।

'कान्यकुब्ज' पत्र से आपको तथा आपके पूर्वजों को कितना प्रेम रहा है इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब से इस पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ तब से यह आपके यहाँ पहुँचता रहा है और उसकी सभी प्रतियाँ आज भी उनके निवास स्थान पर सुरक्षित हैं।

श्री त्रिवेदी जी ने सेक्टर सी, महानगर लखनऊ में अपना निवास (सी–७८४) बनवा लिया है और इस समय वहीं रह रहे हैं।

●●●

"कान्यकुब्ज" के परम हितैषी

श्रीमान् पं० कौशल किशोर त्रिवेदी, एम० एस-सी०

प्रबन्धक, यूनियन बैंक ऑफ़ इण्डिया, अमीनाबाद, लखनऊ

ज्योतिर्विद् श्रीमान् पं० गिरिजा शङ्कर पाण्डेय

[लखनऊ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के शिलान्यास के अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री वी० वी० गिरि के तिलक करते हुए ।]

[परिचय पृष्ठ २६५ पर]

ज्योतिर्विद् श्रीमान् पं० गिरिजा शङ्कर पाण्डेय

महावीर गंज (अलीगंज), लखनऊ

असज्जनः सज्जनसङ्गिसङ्गात्करोति दुःसाध्यमपीह साध्यम् ।
पुष्पाश्रयाच्छंभुशिरोऽधिरूढापिपीलिका चुम्बति चन्द्रबिम्बम् ॥

जो व्यक्ति सत्य का ज्ञान कर सकने में समर्थ है उसके सम्पर्क मे आ कर—उसके सहारे—सत्य से अज्ञात व्यक्ति भी दुःसाध्य कार्यों को अपने लिये सुसाध्य बना लेता है । पुष्प की शरण में जा कर चींटी भी उसके साथ-ही-साथ भगवान् शङ्कर के मस्तक पर जा पहुँचती है और चन्द्र के बिम्ब का स्पर्श अपने लिये सुलभ बना लेती है । सांसारिक घटनाओं के चक्र में पड़ कर जब मनुष्य का साहस छूटने लगता है तो वह ऐसे व्यक्ति का अवलम्ब ढूंढता है जो उसके भविष्य को आशा की किरण से ज्योतित कर सके, उसे कुछ साहस दिला सके, उसमें एक नवीन स्फूर्ति एवं उत्साह भर सके जिससे वह एक बार फिर नियति के घात-प्रतिघातों को सहने के लिये सन्नद्ध हो जाय । और यह काम एक ज्योतिर्विद् ही कर सकता है । ज्योतिर्विद् श्रीमान् पं० गिरिजा शङ्कर जी पाण्डेय के ज्योतिष ज्ञान ने पिछले ६०-६५ वर्षों में कितने लोगो का मार्ग-दर्शन किया है इसका सहज आकलन सम्भव नहीं ।

श्रीमान् पाण्डेय जी का शुभ जन्म एक धर्मनिष्ठ भरद्वाज गोत्रीय खोर के पाण्डेय परिवार में भाद्र शुक्ल तृतीया, संवत् १९५५ (सन् १८९८ ई०) को लखनऊ के महावीरगंज मोहल्ले में हुआ जो अलीगंज के नाम से प्रसिद्ध है । आपके पूर्वज खोर गली कन्नौज से आ कर जगतपुर (जनपद रायबरेली) में बसे जो भगवती गङ्गा के तट पर बक्सर घाट के पास है । आपके प्रपितामह थे पं० राधाकृष्ण पाण्डेय तथा पितामह पं० नारायण प्रसाद पाण्डेय जिनका तत्कालीन शासन में काफ़ी सम्मान था । आपके पूज्य पिता पं० ब्रह्मादीन जी पाण्डेय भी ज्योतिषी तथा पौराणिक कथाकर थे । उन्हें मारुतिनन्दन श्री हनुमान जी का इष्ट था । वह मन्दिर के समीप अलीगंज के जिस क्षेत्र में निवास करते थे उस क्षेत्र का नाम पाण्डेय टोला है । उनका यह नियम था कि वह नित्य मन्दिर जा कर हनुमान जी को बाल्मीकि रामायण सुनाते थे ।

हमारे चरितनायक श्रीमान् पं० गिरिजा शङ्कर जी पाण्डेय की प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत से ही आरम्भ हुई । पहले आपने कैनिङ्ग कॉलेज (अब लखनऊ विश्वविद्यालम) के ओरियण्टल विभाग से संस्कृत की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं, और फिर नवलकिशोर विद्यालय लखनऊ में ही संस्कृत का अध्ययन किया । पुनः ज्योतिषशास्त्र में रुचि होने के कारण उसके अध्ययन के लिये काशी चले गये । वहाँ आपने जिस-जिस विद्यालय में ज्योतिष का अध्ययन होते सुना वहाँ जा कर इस शास्त्र का अध्ययन किया । इसके अनन्तर आपने वहीं ज्योतिष का अध्यापन भी आरम्भ किया । सन् १९४५ (संवत् २००२) में आपके पूज्य पिता जी का देहावसान हो गया जिससे आप पुनः लखनऊ चले आये और यहीं ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड का कार्य करने लगे । तबसे आप बराबर इसी कार्य में संलग्न हैं । निर्लोभ वृत्ति तथा गम्भीर ज्ञान के कारण जनता में आपका बड़ा सम्मान है । गो और ब्राह्मणों के आप भक्त हैं, इस कारण ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड से सम्बंधित ब्राह्मणों की सेवा आप निःशुल्क करते हैं । शासन में आपका कितना सम्मान है इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र

प्रसाद जी ने कानपुर मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास किया और लखनऊ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का शिलान्यास तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री वी० वी० गिरि ने किया तो दोनों बार शिलान्यास कराने के लिये आप ही आमन्त्रित किये गये।

श्रीमान् पाण्डेय जी का शुभ विवाह खानपुर (जिला उन्नाव) निवासी कात्यायन-गोत्रीय बंजेगाँव के मिश्र परिवार में पं० छङ्गालाल मिश्र की सुपुत्री के साथ हुआ जिनसे आपके दो पुत्र हैं—पं० कालीशंकर पाण्डेय तथा पं० शिवशंकर पाण्डेय। यह दोनों ही रेल विभाग में कार्यरत हैं। पं० कालीशंकर जी का विवाह बेहटा कलाँ बाजपेयी खेरा में पं० कृष्णदत्त वाजपेयी की सुपुत्री से हुआ जिनके पुत्र हैं पं० प्रेमशंकर पाण्डेय जो ठेकेदारी करते हैं। प्रेम शंकर जी का विवाह चौक लखनऊ निवासी पं० विश्वम्भर दयाल मिश्र (अब स्वर्गीय) की सुपुत्री से हुआ जिनसे आपके तीन पुत्र-रत्न हैं—विकास, विवेक तथा हर्ष। यह तीनों ही क्रमशः नवीं, सातवीं तथा दूसरी कक्षा के छात्र हैं। पाण्डेय जी के कनिष्ठ पुत्र पं० शिवशंकर जी का विवाह दिलीपनगर कानपुर निवासी लखनऊ के वाजपेयी श्री जगत नारायण जी की सुपुत्री के साथ हुआ जिनके दो पुत्र हैं। इनमें ज्येष्ठ हैं श्री दिनेश कुमार पाण्डेय जो लखनऊ आवास विकास परिषद् के विद्युत् विभाग में जूनियर इञ्जीनियर हैं, इनका विवाह पं० शिव प्रसाद त्रिपाठी की सुपुत्री के साथ हुआ तथा कनिष्ठ पुत्र हैं डॉ० राजेश कुमार पाण्डेय जो जयनारायण डिग्री कॉलेज (कान्यकुब्ज डिग्री कॉलेज) लखनऊ में अरब सभ्यता के प्रवक्ता हैं। यह अविवाहित हैं।

पं० गिरिजा शंकर जी पाण्डेय के लघु भ्राता हैं पं० उमाशंकर जी पाण्डेय, एम० ए० जो इस समय उत्तर प्रदेश सचिवालय के भाषा विभाग में अनुभाग अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। इनका शुभ विवाह मंगलपुर (जनपद कानपुर) निवासी प्रसिद्ध साहित्यकार तथा उपन्यासकार श्रीमान् पण्डित भगवती प्रसाद जी वाजपेयी (अब स्वर्गीय) की सुपुत्री श्रीमती कृष्णा देवी के साथ हुआ जिनसे आपके चार पुत्र हैं। ज्येष्ठतम श्री रविशंकर पाण्डेय, बी० ए०, कारागार महानिरीक्षक के कार्यालय में लेखा-परीक्षक हैं। इनका विवाह सरवनखेड़ा (जनपद कानपुर) निवासी पण्डित सरयू प्रसाद वाजपेयी की सुपुत्री श्रीमती कुसुमलता के साथ हुआ। द्वितीय पुत्र श्री चन्द्रकान्त पाण्डेय आवास विकास परिषद् लखनऊ में कार्य कर रहे हैं। इनका विवाह भी दिलीपनगर (कानपुर) निवासी पं० शिव नारायण वाजपेयी की सुपुत्री श्रीमती ममता पाण्डेय के साथ हुआ जिनके एक शिशु है आयुष्मान् अङ्कित। तीसरे पुत्र श्री रमाकान्त पाण्डेय का अपना प्लास्टिक का व्यवसाय है, जब कि चौथे चि० लक्ष्मीकान्त पाण्डेय हाई स्कूल के छात्र हैं। श्रीमती कृष्णा देवी पाण्डेय एक धार्मिक विचारों की महिला हैं जो घर में ही भगवान् राम जानकी तथा भगवती दुर्गा जी का मन्दिर बनवा रही हैं।

पं० गिरिजा शङ्कर जी पाण्डेय बड़े ही सरल हृदय तथा परोपकारी व्यक्ति हैं जिन्हें देख कर प्राचीन काल के ऋषियों का स्मरण हो आता है। आपका जीवन बहुत ही नियमित तथा सादा है जिससे आप इस नब्बे वर्ष की आयु में भी उतने ही सजग तथा कार्यशील हैं जितने आज से पचास वर्ष पूर्व थे। यह आपका पुण्य-प्रताप ही है जो पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्रों से भरा-पुरा आपका एक सम्मिलित परिवार है जिसके सभी सदस्य आपकी छत्र-छाया में रह रहे हैं।

—:०:—

कान्यकुब्ज-कुल-कुमुद-कलानिधि

स्वर्गीय श्रीमान् पं० परमात्मा शरण जी द्विवेदी
[आपकी पुण्यस्मृति में आपके सुपुत्रों ने 'कान्यकुब्ज'
पत्र को ५०१) रु० भेजे हैं।]

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्रीमान् पं० परमात्मा शरण जी द्विवेदी, एम० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट, हाई कोर्ट लखनऊ का विगत २४ फ़रवरी सन् १९८८ को ८० वर्ष की अवस्था में अचानक हृदय की गति रुक जाने से देहावसान हो गया। इसके केवल १० ही दिन पूर्व रविवार, १४ फ़रवरी १९८८ को आपके ही निवास-स्थान पर सभा की कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई थी जिसे आपने अपनी पूर्ववत् कुशलता के साथ सम्पादित किया था। उस समय किसी को इस बात की स्वप्न में भी आशंका न हो सकती थी कि आपसे इतना शीघ्र विछोह हो जाय। आप बराबर कचहरी जाते थे और सारा कार्य भी आपका विधिवत् चल रहा था। प्रतीत ऐसा होता है कि आपके कनिष्ठ पुत्र श्री आलोक द्विवेदी की २१ नवम्बर १९८७ को कैंसर के कारण हुई असामयिक मृत्यु से आपके हृदय को जो गहरा आघात लगा उसे आप झेल न सके और भीतर ही भीतर घुलते रहे। श्री आलोक द्विवेदी इलाहाबाद हाई कोर्ट के ऐडवोकेट थे जो लखनऊ में ही प्रैक्टिस करते थे। पिता का उन पर असीम अनुराग था और वह वकालत में पिता के दाहिने हाथ भी थे।

पं० परमात्मा शरण जी द्विवेदी का शुभ जन्म कात्यायन गोत्रीय पत्योंजा के द्विवेदी परिवार में ४ मार्च सन् १९०८ ई० को हुआ। शिक्षा समाप्त कर सन् १९३३ में आपने हाई कोर्ट इलाहाबाद में वकालत शुरू की किन्तु दो-तीन महीने के बाद ही आप लखनऊ चले आये और तत्कालीन अवध चीफ कोर्ट में फ़ौजदारी के वकील की हैसियत से प्रैक्टिस करने लगे। फ़ौजदारी अदालत में वकालत करते हुए आपको ६ वर्ष ही हुए होंगे जब आपकी भेंट महात्मा भगवान नारायण स्वामी से हुई जिन्होंने आपको फ़ौजदारी के बजाय दीवानी की प्रैक्टिस करने की प्रेरणा दी। महात्मा जी की इस आज्ञा को देव आज्ञा मान आप दीवानी की प्रैक्टिस करने लगे। सन् १९४८ में अवध चीफ़ कोर्ट का इलाहाबाद हाई कोर्ट में विलय हो जाने पर आप इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेन्च में प्रैक्टिस करने लगे और शीघ्र ही अपनी प्रतिभा तथा विलक्षण तर्कशक्ति के कारण न-केवल लखनऊ वरन् प्रान्त के दीवानी के प्रमुख ऐडवोकेटों में गिने जाने लगे।

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा को आपका सक्रिय सहयोग आरम्भ से ही प्राप्त था। सभा के जातीय कोष को १००१/- प्रदान कर आप जातीय कोष के आजीवन ट्रस्टी भी बन चुके थे। सन् १९७६ में जब पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी [अब स्वर्गीय], भूतपूर्व डाइरेक्टर ऑफ़ मेडिकल हेल्थ, उत्तर प्रदेश, ने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण सभा के सभापति पद से अवकाश ग्रहण किया तो उस पद की गरिमा का भार वहन करने का उत्तरदायित्व आपको सौंपा गया। आप इस उत्तरदायित्व का निर्वाह आजीवन बड़ी ही कुशलतापूर्वक करते रहे। किसी भी समस्या का हल बड़ी ही सूझ-बूझ से निकाल लेना और अपने सुलझे हुए विचारों को बड़े ही नपे-तुले शब्दों में प्रकट करना आपकी विशेषता थी। अपने सभापतित्व काल में आपने प्रतिनिधि सभा को नयी दिशायें दीं और उसे एक व्यापक रूप दिया। यह आप ही का सुझाव था कि भारत की सभी कान्यकुब्ज सभाओं के मन्त्रियों को प्रतिनिधि सभा की कार्यकारणी का पदेन सदस्य बनाया जाय और उनसे बराबर सम्पर्क बनाये रक्खा जाय।

आपका अतिथि सत्कार भी अनुपम ही कहा जायगा। जिस किसी ने एक बार भी आपका आतिथ्य ग्रहण किया वह न तो आजीवन उसे भुला सका और न भुला ही सकेगा। खाने और आग्रह कर-कर के खिलाने के आप

शौकीन थे। कहना तो यह पड़ता है कि जिसने आपके यहाँ जलपान भी कर लिया उसने फिर उस दिन घर में भोजन की इच्छा न की होगी।

शिशुओं का सा सरल हास्य, प्राचीन राज-प्रासादों की भाँति उन्मुक्त विशाल हृदय तथा मलय मारुत की सी मन की उदार प्रवृत्ति परमात्मा ने परमात्मा शरण जी को मानों स्वयं अपनी उदारता का परिचय देने के लिये दे रक्खी थी। आप समाज की कुछ उन गिनी-चुनी महान् विभूतियों में से थे जिनके आदर्श जीवन का अनुकरण करते हुए, जिनके काल-गति पर अंकित चरण-चिह्नों पर चलते हुए हम अपने जीवन-पथ पर धोखा नहीं खा सकते। हाँ! उन विभूतियों में से एक, जो अपने सतत परिश्रम तथा आसामान्य प्रतिभा के बल पर अपने में असाधारण व्यक्तित्व का विकास करते हैं और बन जाते हैं आलोक-पुञ्ज अन्य व्यक्तियों के लिए।

हम उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी द्विवेदी तथा उनके दोनों सुयोग्य सुपुत्रों— श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी, बी०ए०, एल-एल० एम०, रीडर विधि विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, एवम् श्री प्रदीप कुमार द्विवेदी, बी० टेक० (ऑनर्स), डेपुटी जेनरल मैनेजर एन०टी०पी०सी०, नयी दिल्ली— की इस महान् क्षति को समस्त कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज की क्षति समझते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते है कि वह दिवंगत आत्मा को मोक्ष प्रदान करे।

— ० —

शोक समाचार

बड़े ही दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि राष्ट्रीय कवि पद्म-श्री श्री सोहन लाल द्विवेदी का निधन १ मार्च सन् १९८८ को प्रातः ८३ वर्ष की अवस्था में कानपुर के कॉर्डियॉलोजी इन्स्टीट्यूट में हो गया। आप पिछले लगभग दो वर्षों से पेट तथा हृदय के रोगों से पीड़ित थे।

श्री द्विवेदी जी का जन्म बिंदकी जिला फ़तेहपुर में सन् १९०६ में हुआ। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा बिंदकी में ही समाप्त कर आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिये गये जहाँ आप महामना पं० मदन मोहन जी मालवीय के निकट सम्पर्क में आये। उनका आप पर बहुत प्रभाव पड़ा और आप राष्ट्रीय कवितायें लिखने लगे। राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त अपनी कविताओं के कारण ही आप राष्ट्रीय कवि माने गये। स्वतन्त्रता संग्राम में भी आपने सक्रिय भाग लिया जिससे महात्मा गान्धी के सम्पर्क में भी आये। आपकी तीन दर्जन से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को मोक्ष तथा शोक-सन्तप्त परिवार को इस आघात को झेलने की शक्ति प्रदान करे।

— ० —

'कान्यकुब्ज-महिला-रत्न'

१–डॉ. बी. बी. दुबे, रिटा. मेडि. सुपरिंटेंडेंट, वाराणसी
२–श्रीमती मानकुमारी दुबे, मकरन्दनगर, कन्नौज
३–श्रीमती शान्ति देवी पाठक, अहमदाबाद
४–श्रीमती इन्दुमती आर. शुक्ल, एम. ए., बलसाड़
५–श्रीमती शान्ति देवी दीक्षित, लश्कर, ग्वालियर
६–श्रीमती सुशीला देवी मिश्र, एम. ए., खण्डवा

'कान्यकुब्ज-शिरोरत्न'

१–जस्टिस आर.ए. मिश्र, रिटा. जज हाईकोर्ट, लखनऊ
२–जस्टिस जयशंकर त्रिवेदी, रिटा. जज, हाईकोर्ट ,,
३–ब्रिगेडियर के. पी. दुबे, रिटायर्ड, पानदरीबा ,,
४–श्री आर. एन. त्रिवेदी, सेल्स मैनेजर, ऐस्बेस्टॉस ,,
५–डॉ. शिवभजन प्रसाद तिवारी, एम. बी. बी एस. ,,
६–पं. चन्द्रभूषण शुक्ल, एम. ए., प्रो. अशोक ब्रदर्स ,,
७–कैप्टेन सुशील कुमार पाण्डेय, नई दिल्ली
८–श्री सन्तोष कुमार पाण्डेय, ,,
९–बनवारी लाल तिवारी, प्रो. तिवारी ब्रदर्स, कलकत्ता
१०–श्री छोटू भाई अत्रि, अहमदाबाद
११–पं. विनोद शंकर मिश्र, बी. ए. बरेली
१२–श्री ओ. एन. बाजपेयी, मैनेजर, फूड कार्पो. दिल्ली
१३–पं. गंगासहाय पाठक, १३ बल्लभपार्क, अहमदाबाद
१४–पं. रामशंकर बाजपेई, ऐडवोकेट, लश्कर, ग्वालियर
१५–श्री ओंकारप्रसाद द्विवेदी, आई.एफ.एस. रिटा., रीवाँ
१६–श्री पी. सी. दीक्षित, इंचार्ज वर्कशाप, इलाहाबाद
१७–पं. राधाचरण तिवारी, एम.ए.,एल-एल.बी., हरसूद
१८–पं श्यामसुन्दर पाण्डेय, कण्ट्रै., हरसूद, पूर्व निमाड़

'कान्यकुब्ज-हितैषी'

१–जस्टिस महेशनारायणशुक्ल जजहाईकोर्ट, इलाहाबाद
२–पं. श्रीनिवास शुक्ल, ऐडवोकेट, गोलागंज, लखनऊ
३–श्री बालेन्दु प्रकाश मिश्र, मिश्र-भवन, गोलागंज, ,,
४–श्री एल.एन. मिश्र, १५ बी, अशोकनगर, इलाहाबाद
५–पं. उमाशंकर तिवारी मैन्यु केमिस्ट शु.मि. बाराबंकी
६–श्री जे. पी. दुबे, रिटायर्ड कोल कण्ट्रोलर, कलकत्ता
७–श्री सी. एम. पी. त्रिवेदी, आई. आर. एस. रिटायर्ड
८–रायबहादुर शिवशंकर त्रिपाठी, ऐडवोकेट, रायबरेली
९–श्री विमलचन्द्र तिवारी, ऐडवोकेट, इलाहाबाद
१०–सूबेदार पं. भगवानचरण त्रिपाठी, लश्कर, ग्वालियर
११–श्रीजगन्नाथप्रसाद शुक्ल बैंकर्स बालोदाबाजार रायपुर
१२–श्री रामभरोसे अवस्थी, साइकिल डीलर्स, रीवाँ
१३–पं. इन्द्रमणि मिश्र, सम्पादक 'मजदूर', खण्डवा
१४–श्री अखिलेशदत्त शुक्ल, बी.कॉम. स्वरूपनगर कानपुर
१५–श्री शिवशंकर दीक्षित, शकरपट्टी, कलेक्टरगंज, ,,
१६–श्री राजेश्वरी प्रसाद दुबे, रमौली, चम्पारन

'कान्यकुब्ज की संरक्षिका'

१–कवियित्री श्रीमती सूर्यदेवी दीक्षित, 'उषा', कानपुर
२–श्रीमती तारादेवी मिश्र, रामनगर, गाजियाबाद

'कान्यकुब्ज के संरक्षक'

१–डॉ. हरिकृष्ण अवस्थी, रिटा. प्रोफे. वि. वि. लखनऊ
२–पं. मुक्ताप्रसाद शुक्ल, स्टेशन रोड, ,,
३–पं. सिद्धनाथ मिश्र, ऐडवोकेट, रानी कटरा ,,
४–पं. पुरुषोत्तम नारायण मिश्र, राजेन्द्रनगर ,,
५–पं. सीताकान्त शुक्ल, ऐडवोकेट बाराबंकी
६–पं. सुरेन्द्रनाथ मिश्र, एम. ए., रईस, बाँसी, बस्ती
७–पं. दयाशंकर मिश्र, ददरौल शाहजहाँपुर
८–पं. प्रकाशचन्द्र बाजपेयी पिहानी हरदोई
९–पं. शिवदुलारे दुबे, रिटा. प्रिंसि. 'मंगलायतन' इन्दौर
१०–पं. महावीरप्रसादशुक्ल, मेसर्स शुक्ला ब्रदर्स, इन्दौर
११–डॉ. धीरेशचंद्र दीक्षित, प्रिंसि., आयु. का., ग्वालियर
१२–श्री कान्यकुब्ज ब्राह्मण सभा, अहमदाबाद
१३–पं जयशंकर शुक्ल, ११०७, राइट टाउन, जबलपुर
१४–पं. करुणाशंकर शुक्ल, 'करुणेश', चौक, कानपुर
१५–पं रामगोपाल मिश्र, रिटा. डि. चीफ केमिस्ट ,,
१६–पं. उमाशंकर दीक्षित, एम. ए., एल. टी. ,,
१७–पं. रामकृष्ण दीक्षित, ऐडवोकेट, लश्कर, ग्वालियर
१८–पं. हरिसेवक द्विवेदी, रामभवन, रामगंज, लश्कर ,,

Regd. No. LW/NP-63

'पुण्य-स्मृति'

१–स्वर्गीय कविरत्न पं. रमाशंकर मिश्र 'श्रीपति' की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र पं. देवीशंकर मिश्र द्वारा ५००१)
२–स्व. पं. सिद्धेश्वर शुक्ल की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र श्री आर. एन. शुक्ल बंगलोर तथा अन्य पुत्रों द्वारा ११५१)
३–स्व. डॉ. यमुनाप्रसाद मिश्र, सिविल सर्जन की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती कलावती मिश्र द्वारा ११५१)
४–स्वर्गीया श्रीमती पार्वती देवी अवस्थी की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र श्री के. के. अवस्थी कलकत्ता द्वारा ११०१)
५–स्वर्गीय रायबहादुर पं. शंकरदयाल शुक्ल, आई. जी. पुलिस की पुण्य-स्मृति में सुपुत्रों द्वारा ११०१)
६–स्व. पं. रुद्रदत्त शुक्ल, बी. ए., एल-एल. बी. की पुण्य-स्मृति में सुपुत्रों द्वारा १००१)
७–स्व. पं. शिवकुमार महेशदत्त शुक्ल की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र श्री आर. एस. पण्डित बलसाढ़ द्वारा १००१)
८–स्व. महाराज शिवकुमार अवस्थी की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गादेवी अवस्थी अहमदाबाद द्वारा ७०१)
९–स्व. पं. मुरलीधर दुबे, मकरन्दनगर, कन्नौज की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र श्री ओंकारनाथ दुबे द्वारा ५५१)
१०–स्व. राज्यभूषण राजवैद्य पं. रामेश्वर शास्त्री, शुक्ल की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी रमादेवी शुक्ल द्वारा ५०१)
११–स्व. पं. मृत्युञ्जय प्रसाद पाण्डेय, सूबेदार ताकू की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र पं. विष्णुप्रसाद पाण्डेय द्वारा ५०१)
१२–स्व. पं. बालाप्रसाद शुक्ल, ऐडवोकेट की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी तथा सुपुत्रों द्वारा [illegible]०१)
१३–स्व. पं. श्रीनारायण तिवारी व स्व. माता फूलमती की पुण्य-स्मृति में पुत्र पं. वीरेन्द्रनाथ तिवारी द्वारा [illegible]०१)
१४–स्व. डॉ. रामरत्न मिश्र, सिविल सर्जन की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती अन्नपूर्णा देवी द्वारा ५०१)
१५–स्व. महाराज दशरथप्रसाद अवस्थी की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी रमादेवी, सरस्वतीदेवी अहमदाबाद द्वारा ३०१)
१६–स्व. पं. प्रताप नारायण मिश्र की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र डॉ. राजप्रताप मिश्र, लखनऊ द्वारा ३०१)
१७–स्व. डॉ. गुरुचरण दुबे, एम. बी., बी. एस. की पुण्य-स्मृति में पत्नी श्रीमती माया दुबे द्वारा ३०१)
१८–स्वर्गीया श्रीमती रामकुमारी त्रिपाठी की पुण्य-स्मृति में पतिदेव माननीय कामाख्याप्रसाद त्रिपाठी द्वारा २५१)
१९–स्वर्गीया श्रीमती राजविन्देश्वरी शुक्ल की पुण्य-स्मृति में सुपुत्रों द्वारा २५१)
२०–स्वर्गीय श्रीमान् पं. यज्ञेश्वर प्रसाद द्विवेदी, सूबेदार बोरथा की पुण्य-स्मृति में २५१)
२१–स्व. रायबहादुर डॉ. शिवनन्दन तिवारी की पुण्य-स्मृति में उनकी पुत्रवधू द्वारा २५१)
२२–स्व. पं. अनिलकुमार वाजपेयी इञ्जी. की पुण्य-स्मृति में पं. सन्तोषकुमार ऐडवोकेट, ग्वालियर द्वारा २५१)
२३–स्व. पं. शिवकुमार अग्निहोत्री, आई एफ़ एस. की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी द्वारा २५१)
२४–स्व. पं. बहादुरसिंह शुक्ल की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र प. गौरीशंकर शुक्ल, दिल्ली द्वारा २५१)
२५–स्वर्गीया श्रीमती प्रकाशवती मिश्र की पुण्य-स्मृति में पतिदेव श्रीमान् पं. विश्वम्भर देव मिश्र, रायपुर द्वारा २०१)
२६–स्व. पं. विश्वनाथ उपाध्याय, कप्तान पुलिस की पुण्य-स्मृति में सुपुत्रों द्वारा २०१)
२७–स्व. डॉ. केदार प्रसाद त्रिवेदी की पुण्य-स्मृति में उनकी भाभी श्रीमती शान्ति देवी द्विवेदी द्वारा २०१)
२८–स्व. माननीय पं. कामाख्या प्रसाद त्रिपाठी की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र श्री दिलीप कुमार त्रिपाठी द्वारा २०१)
२९–स्व. जस्टिस एल. एस. मिश्र की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रावती मिश्र लखनऊ द्वारा १५१)
३०–स्व. कर्नल श्रीगोविन्द तिवारी की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती तिवारी, इलाहाबाद द्वारा १५१)
३१–स्वर्गीया श्रीमती ब्रजरानी मिश्र, धर्मपत्नी रावराजा डॉ. श्यामबिहारी मिश्र की पुण्य-स्मृति में १५१)
३२–स्वर्गीया श्रीमती फूलवती शुक्ल की पुण्य-स्मृति में सुपुत्र डॉ. देवेन्द्रकुमार शुक्ल द्वारा १५१)
३३–स्वर्गीय कैप्टेन आबालप्रकाश मिश्र की पुण्य-स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती प्रभावती मिश्र द्वारा १५१)
३४–स्व. श्री रुक्मिणीकान्त शुक्ल की पुण्य-स्मृति में पत्नी श्रीमती अन्नपूर्णा शुक्ल लखनऊ द्वारा १५१)
३५–स्वर्गीया श्रीमती प्रभावती मिश्र की पुण्य-स्मृति में उनके सुपुत्रों द्वारा १५१)

Printed at Katyayan Printing Press Lucknow and Published by Pd. Devi Shanker Misra, C-1105, Sector A, Mahanagar, Lucknow-226006